मान मंदिर की रंगीली होली

प्रकाशक

श्रीमान मंदिर सेवा संस्थान

गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशकीय

दुनिया में रंगभरी होली का प्रसार ब्रजभूमि से ही हुआ । ब्रज में श्री राधा माधव ने गोपांगनाओं और गोप कुमारों के साथ जो होरी-लीला की, वह त्रिभुवन विख्यात है । यह ब्रज की शोभा है, ऐसी रसमयी होली केवल ब्रज में ही होती है, ब्रज के बाहर यह रस नहीं है । ब्रज की होली में कोई मर्यादा नहीं होती है । मर्यादा के संकुचित बंधनों को तोड़कर विशुद्ध प्रेम रंग में रंगी होली का रस श्रीराधामाधव ने ब्रज में बहाया है और आज तक ब्रज के विभिन्न ग्रामों में परम्परानुसार श्रीराधामाधव द्वारा द्वापर में खेली गयी होरी का ही अनुकरण ब्रजवासी आज भी अत्यन्त उत्साह और उमंग के साथ करते हैं, चाहे वह बरसाना-नंदगांव की लठामार होली हो अथवा जाव-बठैन की झामों की होली हो अथवा राल-भदार में झंडी जीतने की होली हो अथवा दाऊ जी की कोड़ामार रससिक्त होरी हो । ब्रज की होली के अद्वितीय, विलक्षण और लोकातीत रस का पान करने के लिए बड़े-बड़े देवगण भी लालायित रहते हैं तभी तो अष्टछाप के मूर्धन्य संत कवि नन्ददास जी ने लिखा है –

शेष महेश सुरेश अज अजहू पछताए ।
सो रस रमा तनक नहिं चाख्यो जदपि पलोटत पांय ॥

शेष जी, महादेव जी, इन्द्र, ब्रह्मा आदि देवगण आज तक पछताते हैं कि हम ब्रज में उत्पन्न नहीं हुए अन्यथा हम भी ब्रज की रसमयी होरी क्रीड़ा का रसास्वादन करते । ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी, वैकुण्ठ स्वामिनी, श्री हरिवल्लभा लक्ष्मी जो सदा ही श्री हरि की चरण सेवा में सलग्न रहती हैं, उनको भी ब्रज की रंग भरी होरी का आस्वादन दुर्लभ है । फिर यह रस किसको मिलता है तो नन्ददास जी कहते हैं –

श्री वृषभानु सुता पद अम्बुज जिनके सदा सहाय ।
एहि रस मगन रहत निसि वासर नन्ददास बलि जाय ॥

जिसके ऊपर रासरासेश्वरी, महाभाव स्वरूपा अनंत करुणामयी श्रीराधारानी की कृपा हो जाती है, उसको इस देव दुर्लभ रसामृत का पान करने का सौभाग्य प्राप्त होता है । बाकी लोग इस रस से वंचित ही रहते हैं । चाहे ब्रह्मा बन जाओ, चाहे महादेव बन जाओ अथवा लक्ष्मी बन जाओ, बिना श्रीराधारानी की कृपा के यह रस किसी को नहीं मिल सकता ।

श्रीराधामाधव और उनके परिकरों द्वारा ब्रज में जो रंग भरी - रस भरी होरी-क्रीडाएं की गईं, उनका ब्रज के रसिक महापुरुषों ने दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार किया और कलिकाल की भीषण ज्वाला से तप्त होते मानवों के कल्याण हेतु उन सरस लीलाओं का गान किया । कराल कलिकाल दिन-प्रतिदिन सनातन धर्मी संस्कृति पर कुठाराघात करता जा रहा है, ऐसी भीषण स्थिति में महापुरुषों द्वारा रचित होली-लीला के पद भी विलुप्त होने के कगार पर थे परन्तु मान मन्दिर पर विराजित ब्रज वसुंधरा और ब्रज संस्कृति के प्रति पूर्णतया समर्पित ब्रजनिष्ठ संत परम श्रद्धेय श्रीश्रीरमेशबाबाजी महाराज ने महापुरुषों द्वारा होरी-लीला से संबंधित अनूठे पदों का अत्यन्त सजगता के साथ संग्रह किया और ६५ वर्षों से पूज्य श्री फागुन मास में अपनी अद्भुत संगीत प्रतिभा के साथ मानमन्दिर में इनका गायन करते हैं । वर्तमान काल में भी मानमन्दिर के संकीर्तन-भवन 'रस मण्डप' की सायंकालीन अराधना में अत्यन्त उत्साह के साथ प्रत्येक वर्ष फाल्गुन माह में ब्रज होली के गीतों का गायन होता है ।

पूज्य महाराज श्री की हार्दिक अभिलाषा थी कि महापुरुषों द्वारा रचित ये देवदुर्लभ होली लीला के पद कहीं काल के कुठाराघात की चपेट में आकर विलुप्त न हो जाएँ, श्रृद्धालु भक्त ब्रज संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग इन रसमयी होली लीलाओं से लाभान्वित हों, इसी उद्देश्य से ही महाराज श्री की ही प्रेरणा से ब्रज की होली से संबंधित पदों एवं रसियाओं का संकलन इस पुस्तक "मानमन्दिर की रंगीली होली" में मानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है ।

अनुक्रमणिका

कबहि कृपा की ढ़ार ढ़रोगी ।
आरत दीन परयो हूँ रज में, निज पद रज मम शीश धरोगी ॥
हौं अयोग्य पै पद रज याचत, यह साहस पर कबहि हंसोगी ॥
मो दुखिया की करुणा बानी, कृपामयी तुम कबहिं सुनोंगी ॥
कनककंज मूख अलकन अलियूतं, खंजन अँखियन कब निरखोगी ॥

श्री रमेश बाबा जी महाराज

गुण-गरिमागार, करुणा-पारावार, युगललब्ध-साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा-वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मंद मति की गति विथकित हो जाती है।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।
कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे ।
साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥

(रा.बा.का.दोहा.३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहि गाये ।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे कोटिक तीरथ न्हाये ।

(सू. वि. प.)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये ।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये ॥
जनम-जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ॥

(बाबा श्री द्वारा रचित - ब्र. भा. मा.से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह लेख, मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पायेगा, अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में । सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य-विभूति का प्रकर्ष-आर्ष जीवन-चरित्र कहीं लेखन-कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सू.वि. प.)

मलिन अन्तस् में सिद्ध संतों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक-लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया। माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे । ईश्वरीय-योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल (शुक्ल भगवान् जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को संतान-सुख अप्राप्य रहा, संतान-प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र-कामना ने व्यथित किया। पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

“यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।”

वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्प काल में अध्ययन समापन भी हो गया।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीत-मार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया, सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास स्थल पूज्यपाद का भी वनवास स्थान रहा। "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार पाद-पद्मों को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन-मन-नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरंतर राधारससुधा सिन्धु में

अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलंकृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता “अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज” से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान बरसाना, बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित गहवर वाटिका "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गहवरवन में भी महासदाशया मानिनी का मन-भावन मान-स्थान श्री मानमंदिर ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। मानगढ़, ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है। उस समय तो यह बीहड़ स्थान दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मंदिर प्रांगण में न आने देता। मंदिर का आंतरिक मूल स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पंक के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी। ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे, इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोहदृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरुप जो ठहरे। फिर तो शनैः-शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमन् चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्ण लीला सम्बंधित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्त्रों वृक्ष

लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें, सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज-पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम-संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ, नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत् ६ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ५०,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की भगवन्नाम ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य संपादित किये इन ब्रज संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने। गत पञ्चषष्टि (६५) वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्यों आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं, इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही संभव है । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रासेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्ज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केंद्र बन गयी । सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं। ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है।

रस-सिद्ध-संतों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पायी। श्रीजी की यह गह्वर वाटिका जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है। आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग स्वस्तिवाचन कर रहा है । आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वंदन, अनुक्षण प्रणति भी न्यून है।

आज बिरज में होरी रे रसिया ।।

उतते आये कुंवर कन्हैया, इतते राधा गोरी रे रसिया।
उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, केशर गागर ढोरी रे रसिया।
बाजत ताल मृदंग बांसुरी, और नगारे कि जोरी रे रसिया।
कृष्णजीवन लच्छीराम के प्रभु सौं, फगुवा लियौ भर झोरी रे रसिया।

सजनी भागन ते फागुन आयो मैं तो खेलूंगी श्याम संग जाय ।।

खेलूं आप खिलाऊँ लाल को, मुख पे मलूँ गुलाल।
वाने भिजोई मेरी फूलन अंगिया, मैं तो भिजोऊँ वाकी पाग।
चोबा चन्दन अतर अरगजा, अबीर गुलाल उड़ाय।
बरज रही बरज्यो नहिं मान्यों, हियरा में उठ्यो अनुराग।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, करत अनौखे ख्याल।
जो खेलो तौ सूधे खेलौ, न तो मारूंगी गुलचा गाल।
कृष्ण जीवन लच्छी राम प्रभु सौं, मानूंगी सुहाग।

रसिया होरी में मेरे लग जायेगी, मत मारै दृगन की चोट ।।

अबकी चोट बचाय गयी मैं, कर घूंघट की ओट।
मैं तो लाज भरी बड़े कुल की, तुम तो भरे बड़े खोट।
पुरषोत्तम प्रभु ह्वां जाय खेलो,जहां तिहारी जोट।

रसिया भंवर बन्यौ बैठ्यौ रहियो रे, चल बस मेरी व्यौसार ।।

नथ गढाऊं गुरदा गोखुरू रे, खंगवारी के छल्ला छार।
पलका की दऊं चाकरी रे, अंचरा ते करूं ब्यार।
पुरषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, तो ते नैनां लड़ाऊं द्वै चार।

रसिया आँखिन में मेरे करके मत डारे अबीर गुलाल ॥
अछन-२ पाछे अलबेली, निरखि नवेली बाल।
नयो फाग जोबन रस भीनो, करत अटपटे ख्याल।
दया सखि घनश्याम लाडिले, भुज भरी करी निहाल।

गोरी कुंजन में आज होरी मची है कहा बैठी है मांग सँवारे ॥
मेरी कही जो सांच न मानै, सुन लै ढफ धुंधकारे।
उठ सजनी चल फाग खेल लै, प्रीतम तोहि पुकारै।
नारायण तब बात बनेगी, तू जीतै पिय हारै।

बिहारी छांडि दै होरी में मो सौं बुरी हंसन की बान ॥
या ब्रज घर-घर मेरी तेरी, करत कुचरचा कान।
औरन की तो कहा परेखौ, घर के करत गुमान ॥
तुम तौ छैल विदित या जग में, तुमरी नहिं कछु हान।
निशिदिन सासुल डाटै हम कूं, औ रखनी कुलकाज ॥
जरै रीत या ब्रज कि अनौखी, सुन-सुन भई हैरान।
नागरी दास जो बादर फारै, वा दिन कि मुसकान ॥

सखी री मोर मुकट वारो सांवरिया मोय मिल्यो सांकरी खोर ॥
गली सांकरी ऊँची नीची घाटियाँ दी है मटुकिया फोर।
रतन जटित मेरी इंडुरी जाये हीरा लाख करोर।
एकौ हीरा जो खोवै तेरी सब गायन कौ मोल।
जैसी बजै तेरी बांसुरी रे मेरे नूपुर की घनघोर।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु पर डारूंगी तिनका तोर।

छांड़ो डगर मेरी चतुर श्याम, बिंध जावोगे नैनन में ॥

भूल जाओगे सब चतुराई मारूंगी सैनन में।
जो तेरे मन में होरी खेलन की लै चल कुंजन में।
चोबा चन्दन और अरगजा छिरकूंगी फागुन में ।
चंद्र सखी भज बाल कृष्ण छबि लागी है तन मन में।

ऐसो चटक रंग डारयौ श्याम मेरी चुनरी में पड़ गयो दाग ॥

मोहूँ ते केतिक ब्रजसुंदर उनसों न खेलै फाग।
औरन को अचरा न छुवै या की मोही सौं पड़ गई लाग।
श्री बलिदास वास ब्रज छोड़ो ऐसी होरी में लग जाय आग।

बिहारी काढ़ी दै मेरी (बेदरदी) कसकत आँख गुलाल ॥

सुरझावन दै उरझी मोहन, कंकन सों उरमाल।
अति अधीर पीर नहिं जानत मलत अबीर गुलाल ।
ललित किशोरी रंग कमोरी ढोरत निठुर गोपाल ।

लाख लोग नगरी बसौ रसिया बिन कछु न सुहाय ॥

रायबेल और केतकी मोंगरा, फूली बाग बहार।
सबै फूल फीकै लगै, बिना बलम भरतार।
देखूं हूं दीखै नहीं वह कित गायो नजर बचाय।
देख सलोनो गाड़रु, सारीस ज्यों मंडराय।
बौरी सी दौरी फिरूं, मोय घर अंगना ना सुहाय।
ढूंढन के लाले परे सागर के हिये समाय।

रसिक छैल नन्द कौ री, हेली नैनन में होरी खेलै ॥
भरी अनुराग दृष्टि पिचकारी आय अचानक मेलैं।
और कहा लगि कहो सब विधि, करत भांवती केलैं ।
रूम झूम रसिया आनंद घन, रिझै भिजै रस झेलै।

पिय प्यारी दोउ आज होरी खेलत कालिंदी के तीर ॥
हंस-हंस बदन अरगजा डारत, मारत मूठ अबीर।
चलत कुमकुमा रंग पिचकारी भीजि रहे तन चीर।
जनु घन दामिनि रूप धरै है गोरे श्याम शरीर।
बजत अनेक भांति मृदु बाजै होय रही अति भीर।
नारायण या सुख निरखै बिन कौन धरे मन धीर।

बरज रही नहीं मान्यौ रंगिलौ रंग डार गयौ मेरी बीर ॥
तान दई मम तन पिचकारी फारयो कंचुकि चीर।
चूनर बिगर गयी जरतारी कसकत दृगन अबीर।
मृदु मुसक्यान कमाल नैनन के छेदत तीर गंभीर।
क्षण-क्षण छुअत छैल छतियन को परसत सकल शरीर।
निकस्यो निपट निडर ब्रज बल्लभ निठुर प्रभु बेपीर।

नन्द के गैल चलत मोय गारी दई तेरो आवै अचंभौ मोय ॥
निडर भयौ गलियन में डोलै तोसों और न कोय।
लै पिचकारी मांग ही संग आवै सबरी दई भिजोय।
आनंद घन रसिया रस लोभी अब न छोडूंगी तोय।

हेरी मेरो श्याम भंवर मन लै गयो मेरे नैनन में मंडराय ।।
पनिया भरन मैं घर ते निकसी (मेरे) बांय बोल्यो आय।
पनघट पै ठाढ़ो भयौ मोय भर-भर देय उचाय।
कैसे तो फूटै याकी गागरी याय मिलै नन्द को लाल।
है कोऊ मन की भांवती जो श्याम हि देय मिलाय।
जुगल रूप छबि छैल की रस सागर रह्यौ लुभाय।

होरी को खिलार सारी चूनर डारी फार ।।
मोतिन माल गले सों तोरी लंहगा फरिया रंग में बोरी।
कुमकुम मुठा मारे मार, सारी चूनर डारी फार ।।
तक मारत नैनन पिचकारी ऐसो निडर ढ़ीठ बनवारी।
कर सों घूँघट पट दै डार, सारी चूनर डारी फार ।।
बाट चलत में बोली मारै, चितवन सों घायल कर डारै।
ग्वाल बाल संग लिये पिचकार,------------------- ।।
भरी-भरी झोर अबीर उड़ावै, केशर कीच कुचन लपटावै।
या ऊधम सों हम गई हार,------------------------ ।।
ननद सुने घर देवै गारी, तुम निर्लज्ज भये गिरधारी।
विनय करत कर जोर तुम्हार,--------------------- ।।
जब सों हम या ब्रज में आई ऐसी होरी नाहिं खिलाई।
दुलरी-तिलरी तोरयो हार,------------------------- ।।
कसकत आँख गुलाल है लाला, बड़े घरन की हम ब्रजबाला।
तुम ठहरे ग्वारिया गंवार, ------------------------- ।।
धन-धन होरी के मतवारे, प्रेमी भक्तन प्रानन प्यारे।
अवध बिहारी चरनन चित्त धारे, ------------------- ।।

नैननि में पिचकारी दई मोहि गारी दई होरी खेली न जाय ।।

क्यों रे लंगर लंगराई मोते कीनी, केसर कीच कपोलन दीनी,
लिये गुलाल ठाड़ो मुसकाय,------------------------ ।।
नेक न कान करत काऊ की, नजर बचावै बलदाऊ की,
पनघट सों घर लो बतराय,--------------------------- ।।
औचक कुचन कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस सों ढारै,
यह ऊधम सुन सास रिसाय,------------------------- ।।
होरी के दिनन मोसों दूनो-दूनो अरुझै, शालिग्राम कौन याय बरजै,
अंग लिपट हंसि हा हा खाय,------------------------- ।।

आवै अचक मेरी बाखर में होरी को खिलार ।।

अचक-अचक मेरे अंगना आवै, आप नचै और मोय नचावै,
देखत ननदुल खोल किवार,------------------ ।।
डारत रंग करत रस बतियाँ, सहज हि सहज लिपट जाय छतियाँ,
यह दारी तेरो लगवार,------------------------- ।।
जानै कहा सार होरी की, समुझै बहुत घात चोरी की,
आखिर तो गायन कौ ग्वार,------------------- ।।
शालिग्राम नेक हंस बोलै, कपट गाँठ हियरा की खोलै,
लिपटत होय गरे को हार,---------------------- ।।

डगर चलत मसकै मेरो पाँव तेरौ कैसो सुभाव ।

क्यों मोहन गोहन नहिं छाड़ै गागर में कांकर दे फोरै
सांकरी गली लगावै दाव ------------------------ ।।
सांकरी गली अचानक घेरी, बैयाँ पकर मेरी गागर गेरी
मानत नहिं चौगुनो चाव ------------------------ ।।
मोहन प्रकट भयो ब्रज जब ते, शालिग्राम चाव भयो तब ते
गालन पै गुलचा द्वै चार -------------------------- ।।

छबीली नागरी हो धन तेरो परम सुहाग ।।
तेरेइ रंग रंग्यौ मन मोहन मानत है बड़भाग ।
आज फबी होरी प्रीतम संग लखियत है अनुराग ।
श्री रूपलाल हित रूप छके दृग उपमा को नहिं लाग ।

अचक आय उंगरी पकरी याने कैसी करी ।।
अंगुरी पकर मेरो पहुचो पकरयो, कित ह्वै जाऊं गिरारो सकरयो
लिपटत लाग रही धकरी छतियन कीच दई केसर की
मुरकत गूंज खुली बेसर की, मोतिन माल भली बिखरी ----।।
जो कहूँ ननद सुनेगी मेरी, ये होरी की बातें तेरी
(अंखियन)छतियन बीच गुलाल धरी -------- ।।
शालिग्राम देखियत वारौ, श्री मुख चन्द्र कमरिया वारौ

अंतर को कारो सिगरी ---------------------- ।।
अंग लिपट हंसी हा-हा खाय होरी खेली न जाय
सर-सर झोर अबीर उड़ावै, केसर कुमकुम मुख लपटावै
या होरी को कहा उपाय ---------------------- ।।
कोरे माटन केशर घोरी, पचरंग चूनरि रंग में बोरी
घर जाऊं सुने सास रिसाय ------------------ ।।
घूंघट में पिचकारी मारै, सारी चोरी लहंगा फारै
मुख सों अंचल देय हटाय --------------------- ।।
ग्वाल बाल सखियन ने घेरयो, अतर अरगजा नैनन गेरयो
कनक कलस रंग सिर सों च्वाय ------------- ।।
सखियन पकरे नन्द कौ लाला, लाली रूप बनायो बाला
काजर मिस्सी दई लगाय --------------------- ।।
साड़ी औ लंहगा पहिरायो, टिकुली सेंदुर मांग भरायौ

सीस ओढ़ना दियो उढ़ाय ---------------------- ॥
हाथन मेंहदी पांय महावर, बिछुवा पायल पहरे गिरधर
अद्भुत शोभा बरनी न जाय --------------------- ॥
कान झुब-झुबी बाला वारी, नथुनी बलका बेसर धारी
सोलह सिंगार दियो रचाय ---------------------- ॥
जसुदा ढिंग लालन धार धाई, दीन उरहनो बहुत खिजाई ॥
अवध बिहारी मन ललचाय ---------------------- ॥

ढ़फ बाजे कुंवरि किशोरी के ॥
तैसी संग सखी रंग भीनी, छैल-छबीली गोरी के।
हो हो कही मोहन मन मोहन, प्रीतम के चित चोरी के।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी, कर डफ गावत होरी के।

ब्रज मण्डल देस दिखाय रसिया ॥
तेरे बिरज में मोर बहुत हैं, कोंहक मोर फटै छातिया।
तेरे बिरज में गाय बहुत हैं, पी-पी दूध भई पटिया।
तेरे बिरज में बंदर बहुत हैं,सूनो भवन देख धसिया।
पुरषोत्तम प्रभु की छवि निरखै तेरे चरन मेरो मन बसिया।

बरसाने महल लाड़ली के ॥
और पास वाके बाग बगीचा, बिच-बिच पेड़ माधुरी के।
तिन महलन विहरत पिया प्रीतम निशिदिन प्रिया चाड़िली के।
वृन्दावन हित रंग बरसत है, छिन-२ रस जु बाढ़िली के।

बरसाने चल खेलैं होरी ॥

पर्वत पे वृषभानु महल है, जहाँ बसे राधा गोरी ।
चोबा चन्दन अतर अरगजा, केशर गागर भर घोरी ।
उतते आये कुंवर कन्हैया, इत ते राधा गोरी ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन कूं, चिरजीवो मंगल जोरी ।

गहरे कर यार अमल पानी ॥

कूंडी सोटा दाब बगल में,भांग मिरच की मैं जानी ।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में यमुना लहरानी ।
लै चलि है बरसाने तोकूँ, होय भानु घर मेहमानी ।
तोय करै होरी को भरुवा, हम होंगे तेरे अगवानी ।
पुरषोत्तम प्रभु कि छबि निरखैं, रस कि है ह्वां रजधानी ।

दरसन दै निकसि अटा में ते ॥

लट सरकाय दरस दै प्यारी, निकस्यो चंद घटा में ते ।
कोटि रमा सावित्री भवानी, निकसी चरन छटा में ते ।
पुरषोत्तम प्रभु यह रस चाख्यो, माखन कढ़यो मठा में ते ।

दरसन दै नन्द दुलारे ॥

मोर मुकुट कानन में कुंडल, होठन बंसीवारे ।
हाथ लकुट कम्मर की खोई गौअन के रखवारे ।
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि,जीवन प्राण हमारे ।

ढ़फ बाज्यो छैल मतवारे को ॥

ढफ कि गरज मेरो सब घर हाल्यो, हाल्यो खंभ तिवारे को।
ढफ की गरज मेरो सब तन हाल्यो, हाल्यो झुब्बा नारे को।
पुरषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, ये रसिया नन्द द्वारे को।

अलबेली कुंवर महल ठाड़ी ॥

गहे पिचक रंग भरत श्याम को, उतते प्रीती भरन गाढ़ी।
हो-हो कहि मोहन मन मोहत, मनहूँ रूप निधि मथि काढ़ी।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी, कर डफ गावति छवि बाढ़ी।

बन आयो छैला होरी कौ ॥

मल्ल काछ सिंगार धरयो है, फेंटा सीस मरोरी कौ।
सोंधों भरयो उपरना सोहै,माथे बिंदा रोरी कौ।
पुरषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, ये रसिया या गोरी कौ।

नेक आगे आ श्याम तोपे रंग डारूं ॥

रंग डारूं तेरे मरवट माढ़ूं गालन पै गुलचा मारूं।
एढ़ी-टेढ़ी पगिया बांधू पगिया पै फुलरी पाऊँ।
पुरषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, तन मन धन जोवन वारूँ।

रसिया को नार बनावो री ॥

कटि लंहगा उर मांहि कंचुकी, चूनर सीस ओढ़ावो री।
बांह भरा बाजूबंद सोहै, नथ बेसर पहिरावो री।
गाल गुलाल नयन में कजरा, बेंदी भाल लगावो री।
आरसी छल्ला औ खंगवारी, अनवट बिछुवा लावो री।
नारायण तारी बजाय के, यशुमति निकट नचावो री।

पनघटवा कैसे जाऊं री ।।

पनघट जाऊं पनघट जैहै, बिन भीजै नहिं आऊँ री।
केसर कीच मची गैलन में, कैसे जल भर लाऊँ री।
सुंदर स्याम गुलाल मलेंगे, लाजन मरि-२ जाऊं री।
कृष्ण पिया सों मेरो मन मान्यो, का विधि नेह निभाऊँ री।

कान्हा धरे मुकुट खेलैं होरी ।।

उतते आये कुंवर कन्हैया, इतते राधा गोरी।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भर-२ झोरी।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम घन, जुग जीवौ यह जोरी।

यमुना तट खेलै होरी ।।

नवल किशोर श्याम घन सुंदर, नवल बनी राधा गोरी।
नवल सखा गये नव उमंग में, नवल रंग केसर घोरी।
नवल सखी ललितादिक हिलमिल नवल त्रिया गावैं होरी।
नवल गुलाल अबीर कुमकुमा, घुमड़्यो गगन चहुँ ओरी।
कृष्ण पिया नवजोबन राधे, चिरजीयो जुग-२ जोरी।

छैला तोय बुलाय गई नथ वारी ।।

वा नथ वारी को लम्बो गिरारो, ऊँची अटा बैठक न्यारी।
वा नथ वारी को नाम न जानूं मोय बताई तेरी घरवारी।
कूंडी सोटा लै चल रसिया,खूब करै खातरदारी।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम घन, रोम-रोम तोपै वारी।

होरी में लाज न कर गोरी ॥

हम ब्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनी है यह जोरी।
जो हमसे सूधे नहिं बोलो, यार करेंगे बरजोरी।
नारायण अब निकसि द्वार ते, छूटौ नहिं बनके भोरी।

मैं तो मलूँगी गुलाल तेरे गालन में ॥

गाल गुलाल नैन में कजरा, बेनी गुहों तेरे बारन में।
आज कसक सब दिन की काढ़ूं, बेंदी दऊँ तेरे भालन में।
चन्द्रसखी तोहि पकरि नचाऊँ, वीर बनूं ब्रज बालन में।

गलियन बिच धूम मचावै री ॥

ग्वाल बाल लिये कुंवर कन्हैया, नित उठ भोरे हि आवै री।
हाथ अबीर गुलाल फेंट भर, गागर रंग ढुरावै री।
सुनि अति हि ऊधम रसिया को, जियरा बहुत डरावै री।
बाजत ताल मृदंग बाँसुरी, गारी और सुनावै री।
सूरदास प्रभु कि छवि निरखत, नैनन हा-२ खावै री।

चलो ऐयो श्याम मेरे पलकन पै ॥

तू तौ रे रीझयो मेरे नवल जोवना, मैं रीझी तेरे तिलकन पै।
तू तौ रे रीझयो मेरी लटक चाल पै, मैं रीझी तेरी अलकन पै।
पुरषोत्तम प्रभु कि छबि निरखै, अबीर गुलाल की झलकन में।

खेलैं नन्द दुलारो हुरियाँ री ॥

रंग महल में खेल मच्यो जहाँ, राधा लहुरि बहुरियाँ री।
रंग गुलाल उलेंडनी डारे, ललिता आदि छुहरियां री।
वृन्दावन हित निरखि प्रशंसित,बाला रूप जुहरियाँ री।

डोरी डालूंगी महल चढ़ अैयो रसिया ॥
पौरी में मेरो सुसर सोवत हैं,आँगन में ननदुल दुखिया।
ऊंची अटरिया पलंग बिछयो है, तोषक गिलम गलीचा तकिया।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम घन, वहीं तेरी तपन बुझाऊँ रसिया।

रसिया आयौ महल खबर कीजौ ॥
जब रसिया सेजन पै आयो, छतियाँ सों लपटाय लीजौ।
पुरुषोतम प्रभु कुंवर रसिक, याके मन कि तपन बुझाय दीजौ।

आज यहीं रहो छैल नगरिया में ॥
घर के बलम कूं मीसी कूसी रोटी रसिया कूं पूवा थरिया में।
घर के बलम दार मोठ की, रसिया को भात छबरिया में।
घर के बलम कूं खाट खरैरी, रसिया कूं पलंग अटरिया में।
पुरषोत्तम प्रभु छैल हमारे, तेरे खिलौना मेरी अंगिया में।

नित आयो कर लाला तोते सब राजी ॥
सासहु राजी सुसर हू राजी कहा करै बलमा पाजी।
उरद की दाल गहुँ के फुलका, बेंगन साग चना भाजी।
पुरषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, रसिया सों मेरो मन राजी।

होरी आई श्याम मेरी सुध लीजो ॥
मैं हूँ सास ननद के बस में, मेरी गलियन फेरा दीजो।
खेलन मिस अैयो मेरे अंगना, जीवन कौ कछु रस लीजो।
पुरषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, हियरा ते लिपटाय लीजो।

मोहि दै दे दान घूँघट वारी ।।
खोल घूंघट मैं दान लेउंगो, मूठ गुलाल गालन मारी।
फूल सुहाग हार पहराऊँ, सुन्दरी छोड़ो लाजन सारी।
रसिक श्याम की बतियाँ सुनकै, मुदित भई है सुकुंवारी।

मृगनैनी नारि नवल रसिया ।।
अतलस कौ याको लंहगा सोहै, झूमक सारी मन बसिया।
अंगुरिन में मुंदरी रतनन की, बीच आरसी मन बसिया।
बांह भरा बाजूबंद सोहै, हिये हमेल दियै छतियाँ।
बड़ी-२ अँखियन कजरा सोहै, टेढ़ी चितवन मन बसिया।
गोरी-गोरी बहियन हरी-हरी चुरियाँ, बंद जंगाली मन बसिया।
रंग महल में सेज बिछाई, लाल पलंग पचरंग तकिया।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, सबै छोड़ मैं ब्रज बसिया।

गौने आई एक नारि बड़ी भोरी ।।
गोरौ बदन बंक वाकी चितवनि बड़े-बड़े नैन उमर थोरी।
कै तो वाके चोरौ माखन, कै चली संग खेलौ होरी।
रसिक गोविन्द अभिराम श्याम घन, बहुत गई रह गई थोरी।

मत मारै छैल मेरे लग जायेगी ।।
छरी गुलाब की बहुत कटीली, गोरे अंग में चुभ जायेगी।
स्यालू सरस कसब कौ लंहगा, खासा की अंगिया दरक जायेगी।
भृकुटी भाल तिलक केसर कौ, कजरा की रेख बिगर जायेगी।
पुरषोत्तम प्रभु कहत ग्वालिनी, चरनन माहि लिपट जायेगी।

ककरेजी तेरो चीर कहाँ भीज्यो ॥

जो तू कहत है पनियां भरन गई, मैं जान्यो नन्द को रीज्यौ।
फागुन मास लाज अब कैसी,फिर पीछे बदलो लीजो।
गोविन्द प्रभु सों फगुवा लैके, अंकन भरि मन कौ कीजौ।

रसिया मोय मोल मुल्याय लीजो ॥

जो रसिया मोय हलकी जानै, कांटे पै तुलवाय लीजो।
जो रसिया मोय पतरी जानै, अपनो जोर जमाय लीजो।
पुरुषोत्तम प्रभु कुंवर लाड़िले, तनकी तपत बुझाय लीजो।

जागे मेरी सास अटारी में ॥

पौरी खोल चलो मत अइयो, सोवै ननद तिवारी में।
सुसर की रीति बड़ी है खोटी, डारै हाथ कटारी में।
अब घनश्याम फेर तुम अैयो, आधी रात अन्ध्यारी में।

उड़ जा रे भंवर तोहि मारूंगी ॥

उड़ि भंवरा छतियां पै बैठ्यो, कैसे बोझ सम्हारुंगी।
एक भंवर सो प्रीति हमारी, दूजो नाहि निहारुंगी।
पुरुषोत्तम प्रभु भंवर हमारे, तन मन जोबन वारुंगी।

ब्रज कौ दिन दूलह रंग भरयो ॥

हो-२ होरी बोलत डोलत, हाथ लकुट सिर मुकुट धरयो।
गाढ़ै रंग-रंग रंग्यो ब्रज सगरो, फाग खेल को अमल परयो।
वृन्दावन हित नित सुख बरषत, गान तान सुनि मन जु हरयो।

हरी रसिया खेलत है होरी ।।

मोर पखा मूठा सिर डोलत, झूमक दै नाचत गोरी।
कनक लकुट लिये ब्रज नागरि, मुसकत है थोरी-थोरी।
कर जेरी नग जटित श्याम के, अबीर गुलाल भरे झोरी।
खेलत श्री ब्रजराज पौरी पै होत परस्पर बरजोरी।
वृन्दावन हित धाई-२, धरत भरत रंग दुहूं ओरी।

हरी होरी रंग मचावत है ।।

जोबन रूप छबयो मद ढोटा, तुव लखि नैन नचावत है।
घर-२ जाय फाग के फोकट, निलजी गारी गावत है।
आपुन भरत रंग पट बनितनी, इनकी चोट बचावत है।
भर कलश अरगजा मोहन, जुवतिन के सिर नावत है।
दै करतारी हो हो कहि-२, बाजे विविध बजावत है।
जो कोउ गली गल्यारे निकसै, धाई जाइ गहि लावत है।
वृन्दावन हित नगर नंदीश्वर, आपुन भीजि भिजावत है।

गोरी तेरे नैना बड़े रसीले ।।

बिहंस उठत निरखत मेरो मुख, घूँघट पट सकुचीले।
फागुन में ऐसी नहिं चहिये, ये दिन रंग रंगीले ।
ललित किशोरी गोरी खंजन, बिन अंजन कजरीले।

होरी में बारजोरी करेंगी ।।

कहा चमकावत मोर के चंदा, बदन मांड ते हम ना डरेंगी।
कान पकरि मुख गुलचा दै हैं , अपु अधीन करि रंगन भरेंगी।
वृन्दावन हित रूप लाडिले, ऐंड़न रहि है अब निदरेंगी।

ठाढ़ो रे कनुवा ब्रजवासी ।।

रंग ढारि कित भज्यो लंगरवा, लोग करै मेरी हांसी।
बालपन खेलन में खोयो, गोकुल में बारामासी।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, जनम-२ तिहारी दासी।

फगुवा दै मोहन मतवारे ।।

ब्रज की नारि गारी गावत, तुम द्वै बापन बिच वारे।
नन्द जी गोरे जसुमति गोरी, तुम याही ते भये कारे।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत, गोप वेश लियो अवतारे।

फागुन में रसिया घर वारी ।।

हो-हो बोलै गलियन डोलै, गारी दै-२ मतवारी।
लाज धरी छपरन के ऊपर, आप भये हैं अधिकारी।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत, ग्वाल करै सब किलकारी।

वृन्दावन खेल रच्यो भारी ।।

वृन्दावन की गोरी नारी, टूटे हार फटी सारी।
ब्रज की होरी ब्रज की गारी, ब्रज की श्री राधा प्यारी।
पुरुषोत्तम प्रभु होरी खेलैं, तन मन धन सर्वस वारी।

वृन्दावन मोहन दधि लूटी ।।

कहां तेरो हार कहां नक बेसर, कहा मोतिन की लर टूटी।
जाय कहूं यशुमति के आगे, झकझोरत मटकी फूटी।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को, सर्वस दै ग्वालिन छूटी।

ब्रज की तोहे लाज मुकुट वारे ।।

सूर्य चन्द्र तेरो ध्यान धरत है, ध्यान धरत नव लख तारे।
इंद्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर, तब गिरिवर कर पर धारे।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत, गाय गोप के रखवारे।

चिरजीयौ होरी के रसिया ।।

नित ही आवो मेरे होरी खेलन, नित गारी नित ही बसिया।
जो लो चंदा सूरज उदय रहै, तो लौं ब्रज में तुम बसिया।
हरी चंद इन नैन सिरायो, पीत पिछोरी कटि कसिया।
हंसत खेलत मेरी उमर बितानी, तेरी कृपा ब्रज में बसिया।
मोर मुकुट पीतांबर सोहै, अति रस की पगिया कसिया।
ब्रज दूलह यह छैल अनोखो (तेरी) हंस चितवन मेरे मन बसिया।

दरसन दै मोर मुकुट वारे ।।

कटितट राजत सुभग काछनी, फरकत पीरे पटवारे।
पुरुषोत्तम प्रभु के गुण गावैं, शेष सहस मुख रट हारे।

इन गलियन काम कहा तेरो ।।

इन गलियन मेरो स्यालूरा फाटयो, मैं फारुंगी श्याम झगा तेरो।
इन गलियन मेरो खोयो रे नगीना, मैं जोरुंगी पंच करुँगी नेरो।
इन गलियन तू तो ऐंड़ो ही डोले, तेरी काढ़ूंगी ऐंड़ करुँगी चेरो।
प्राण जीवन लच्छी राम के प्रभु प्यारे, हरि चरनन में मन मेरो।

होरी खेलो तो कुंजन चलो गोरी ॥

एक ओर रहो सब ब्रज वनिता, तुम रहो राधे जू हमारी ओरी।
चोबा चन्दन अतर अरगजा, लाल गुलाल भरे झोरी।
ललित किशोरी प्रिया प्रीतम मिलि, खेलेंगे फाग सरा बोरी।

ठाड़ी रह ग्वालिन मदमाती ॥

यह अवसर होरी को हैरी, हम तुम खेलैं संग साती।
भूलि गयो घर गैल हमारी, लै लगाय अपनी छाती।
पुरुषोत्तम प्रभु हंसत हँसावत, ब्रज बनिता सब गुण गाती।

मैं तो चौंक उठी डफ बाजन सों ॥

सोवत ही अपने आँगन में, जागी गारी गाजन सों।
देखूं तो द्वारे मोहन ठाड़े, सजे छैल सब छाजन सों।
पुरुषोत्तम मेरो नाम लै लै तिन, गारी दई बिन लाजन सों।

देखि सखी वृषभानु किशोरी ॥

निज प्रीतम को रूप निहारति, जा विधि चंद्र चकोरी।
जो लों फाग खेलन को निकसी, बीच भई चित की चोरी।
नारायण अटके दृग छबि में, भूलि गई सुधि होरी।

आज हरि डगर मचाई धूम ॥

जो ब्रज नारि गई जल भरवे, बीचहिं ते आई घूम।
अति सुंदर नव जोबन भोरी, गज गति चलति है झूम।
नारायण जो तू बच आवै, लेहूं तेरे पग चूम।

दरसन दै चंद बदन गोरी ॥

यह ओसर नहिं सकुच करन कौ, फागुन में छैल करैं जोरी।
मुख निकासि घूंघट पट मेते, ललित कपोल मलैं रोरी।
हीरा सखी हित ब्रज में बसिके, लाज के काज न तज होरी।

रसिया आयो द्वार खोल गोरी ॥

फागुन मॉस न लाज करन को, बाहर निकसि खेलि होरी।
बार-बार हम कहत न मानत, दुरि क्यों रहि है भवन ओरी।
हीरा सखी हित सुन नव नागरी, विनय करूँ तेरी कर जोरी।

मोहन हो-हो होरी ॥

कान्हि हमारे आंगन गारी दै आयो सो कोरी।
अब क्यों दुरी बैठे जसुदा ढ़िंग, निकसो कुंज बिहारी।
उमंगि-२ आयी गोकुल की, सकल मही धन वारी।
तबहि लला ललकारि निकारी, रूप सुधा की प्यासी।
लपटि गई घनश्याम लालसों,चमकि-२ चपलासी।
काजर दै बनाई भरुवा कह, हंस-२ ब्रज की नारी।
कहि रसखान एक गारी पै, सौ आदर बलिहारी।

चलो मोहन खेलो संग होरी ॥

केसर रंग भरी पिचकारी अबीर गुलाल कि झोरी।
ललिता सुन बिन कहे तूं मेरे जइयो मत उनकी ओरी।
हीरा सखी हित आज श्याम कूं पकर नचाव नव ओरी।

प्यारे खेलूंगी तुम संग होरी।
बड़े खिलार हौ हरि हम तो हैं अति भोरी।
खबर परैगी आज फाग में कैसी तिहारी बरजोरी।
हीरा सखी हित कहत कठिन है जानो मति माखन चोरी।

ब्रज मोहन छैल नवल रसिया ।।
आठो पहर फाग नित होरी, राखत राधा मन बसिया।
कर लिये ताल गुलाल फेंट में, नव नागरि उर को बसिया।
हीरा सखी हित अचल रहौ यह, रसिक जनन दृग फंसिया।

इकली कहाँ जाति आज गोरी ।।
मिली बहुत दिन में औचक ही, खेलूं अब तो संग होरी।
हिय बिच और बिचार करै जिन, मेरी तेरी बनी युगल जोरी।
हीरा सखी हित फाग मनावो, होई तबै सुख उर ओरी।

को खेलै श्याम तुम ते होरी ।।
बातन सूगढ़ टूटत नाहिन, छोड़ो मग करिबो जोरी।
लग्यो मास फागुन जा दिन ते, भूलि रहे माखन चोरी।
हीरा सखी हित कहत सांवरे, जानों मति मोंकूं भोरी।

इक बात हमारी सुन गोरी ।।
पट लगाइ मंदिर कित बैठी, बाहिर आ खेलै होरी।
फागुन में यह धरम अलीरी, या में समझि कहा चोरी।
हीरा सखी हित मानि सिखि किन, प्रीति नई जिन दे तोरी।

डफ धर दे यार गई परकी ।।

खेलत-२ देह पिरानी और मलीन भई तरकी ।
सैन अनंग सकल सकुचानी, कुम्हलानी कमल कली सरकी ।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि, शरणागत राधावर की ।

खेलत-२ सबरी भींज गई तरकी ।।

सूर सिंगार मेरो सबै भिगोयो नक बसेर की मुर उरझी ।
ब्रज दुलह यह छैल अनोखो बलिहारी राधावर की ।
सूरदास प्रभु है रस की छवि होरी खेलय रंगीली गली की ।

रस लै रै रसिया फाग को ।।

अब तोहि नन्द के खबर परैगी, या होरी के अनुराग कौ ।
बाहर लोग चबाव करत है, या तेरी मेरी लाग को ।
दया सखी मोहन जब आवै, तब मानूंगी भाग को ।

हम चाकर राधा रानी के ।।

ठाकुर श्री नंदनंदन के, वृषभानु लली ठकुरानी के ।
निर्भय रहत वदत नहीं काहू, डर नहि डरत भवानी के ।
हरिश्चन्द्र नित रहत दिवाने, सूरत अजब निवानी के ।

रस लै तो द्वार परयो रहियो ।।

जो तू रसिया रस को भूखो, मार धार सब की सहियो ।
जइयो ना कहुं इन द्वारन ते, लली चरनन को सुख पइयो ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, प्रेम सुधा कौ रस चखियो ।

कैसी होरी बिरज में आय लगी ॥

कान्हा होरी को आयो मोर मुकुट धर, द्वार पै धूमस होन लगी।
कोई एक गावै डफहि बजावै, मेरी छतियन धक-धक होन लगी।
होरी में आग लगि न लगी, मेरे जियरा में नेह की आग लगी।
होरी खेलन मैं तो बाहर आई, मेरे गाल गुलाल की मूठ लगी।
मैं तो भाजी मोय पकरी और बोल्यो मेरी तोते गोरी लगन लगी।
कैसी होरी बरजोरी मैं तो खीझी जोराजोरी,मेरे हाथ पीताम्बर की फैंट लगी।
पीत पट जो छुड़ायो संग घर घुस, पैंया पर वाकी हा-हा होन लगी।

फगुना जाय मत रे होरी कौ खिलैया यार ॥

जो फागुना तू जयगो रे, मरूंगी जहर विष खाय।
फगुना फूल गुलाब को रे, धूप लगे कुम्हलाय।
रासिया कौ घर सामई, गोरी की लाल किवार।
लचक –लचक गोरी जल भरे, मल -२ रसिया न्हाय।

मतवारी ग्वालिन अंचरा संभार ॥

तब ही ते कछु अधिक भई है धरत धरनि पर भार।
तन सुख सारी गुजराती लंहगो अरु अंगिया पर हार।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु प्यारे छवि पर हो बलिहार।

फगुना जाय मत रे होरी कौ खिलैया यार ॥

फगुना मेरे पाहुने याको कहा लऊं आदर भाव।
काहे की पातर करूं कौन परोसन हार।
हियरा की पातर करूँ दोउ नैन परोसन हार।
काहे को गूँजा करूँ काहे को भरूं कसार।

गालन को गूंजा करूं होठन को भरूं कसार।
काहे को लडुआ करूं काहे की रान्धू खीर।
जोबन को लडुआ करूँ रस की रान्धू खीर।
न्योत जिमाऊं बालमा मेरी सगी ननदी को बीर।

चली चल यों ही बके बजमारो ये तो होरी को छैल मतवारो ॥
जब ते लगी बसंत पंचमी रोकत गैल गिरारो।
एक दिना मोहे अंक भर लीनी हंस –हंस घूँघट टारो।
जो कहूँ होती सखी कोउ संग में तो कछु देती सहारो।
उबट बाट फंसी गहवर में, कैसे होय किनारो।
तू भोरी छल बल नहीं जाने, है जोबन तेरो बारो।
नागरिया जो तोय देखेगो, नेक टरेगो न टारो ॥

सांवरे मोहि रंग में बोरी ॥
बैंया पकर के मेरी गागर छीन के सिर ते ढ़ोरी।
रंग में लालन रंग मगी कीनी डारी गुलाल की झोरी।
गावन लग्यो ते होरी ॥
आज अचानक मिल्यो री डगर में तब निरख्यो नन्द कौ री।
भरी भुज लै मोहि ब्रज जीवन ने पकरी करि बरजोरी।
माल मोतियन की तोरी ॥
मर्यादा मेरी कछु न राखी कही एक बात ठगोरी।
तब उनको मैं आँख दिखाई मत जानो मोहि भोरी।
जानूं तेरे चित की चोरी ॥
मेरो जोर कछु नाय चाल्यो, कंचुकी की कस तोरी
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को, रसिया ने रंग में बोरी ॥

ब्रज में हरि होरी मचाई ॥

इतते आई कुंवर राधिका उतते कुंवर कन्हाई
हिलमिल फाग परस्पर खेलत शोभा बरनी न जाई
नन्द घर बजत बधाई ॥
बाजत ताल मृदंग बांसुरी बीन ढफ शहनाई
उड़त गुलाल लाल भये बादर रह्यो सकल ब्रज छाई
मानो मघवा झर लाई ॥
लै-लै रंग कनक पिचकाई सन्मुख सबै चलाई
डारत रंग अंग सब भीजे झुकि-२ चाचर गाई
परस्पर लोग लुगाई ॥
राधे सैन दई सखियन को झुण्ड-२ घिरि आई
लपट झपट लई श्याम सुंदर सो बरबस पकरि लै आई
लाल को नाच नचाई ॥
छीन लई मुरली पीताम्बर सिर चूनर उड़ाई
बेंदी भाल दृगन बिच अंजन नक बेसर पहराई
मानो नई नारि बनाई ॥
मुसकत हौ मुख मोरि - मोरि कै कहाँ गई चतुराई
कहाँ गये तेरे पिता नन्द जू कहाँ यशोदा माई
तुम्हें अब लेहि छुड़ाई ॥
फगुवा दिये बिन जान न पैहौं कोटि करो चतुराई
लैहै काढ़ि कसक सब दिन की तुम चितचोर कन्हाई
बहुतै दधि माखन खाई ॥
कृष्ण रंग फगुवा जु भांवातो दैके बहुत रिझाई
श्यामा श्याम युगल जोरी पै सूरदास बलिजाई
प्रीति उर रही समाई ॥

होरी हो ब्रजराज दुलारे ॥
अब क्यों जय छिपे जननी ढिंग, द्वै बापन के वारे
कै तो निकस के होरि खेलो, कई कहो मुख ते हारे
जोर कर आगे हमारे ॥
बहुत दिनन सों तुम मनमोहन फाग ही फाग पुकारे
आज देखियो खेल फाग कौ, रंग की उड़त फुहारें
चले जहाँ कुम –कुम न्यारे ॥
निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे
नारायण अब खबर परेगी, नेक निकस आय द्वारे
सूरत अपनी दिखलारे ॥

कैसा है यह देश निगोरा, जग होरी ब्रज होरा ॥
मैं यमुना जल भरन जात ही, देख रूप मेरा गोरा
मोते कहे नेक चल कुंजन, तनक - तनक से छोरा
परे नैनन में डोरा ॥
मन मेरो हरयो नन्द के ने सजनी, चलत लगावत चोरा
कहा बूढ़े कहा लोग लुगाई, एक ते एक ठिठोरा
न मान्यो एक निहोरा ॥
जियरा देख डरात रि सजनी आयो लाज सरम की ओरा
कहे रसखान सिखाय सखन को, सब मेरो अंग टटोरा ॥

करुँगी कपोलन लाल मेरी अंगिया न छूवो ॥
यह अंगिया नहिं धनुष जनक कौ, छुवत टूट्यो तत्काल ।
नहिं अंगिया गौतम की नारी, छुवत उड़ी तत्काल ।
कहा विलोकत भृकुटी कुटिल कर, नहि ये पूतना ख्याल ।
यह अंगिया काली मत समझो, जाय नाथ्यो जाय पाताल ।

गिरिवर धार भयो गिरिधारी, नहि जानो ब्रजबाल।
जावोजी खेलो सखन के संग, मिली गौवन के प्रतिपाल।
इतनी सुन मुस्काय सांवरे, लीनो अबीर गुलाल।
सूरदास प्रभु निरखि छिरकीअंग, सखियन कियो निहाल।

रसिया को मोहल्लो न्यारो रसिया को ॥
ऊँचे पे नंदगांव बसत है जहाँ राजत वंशीवारो री।
बरसाने याकि भई सगाई यह राधा को घरवारो री।
बाबा वृषभान को नगद जमाई श्री दामा याको सारो री।
पुरुषोत्तम प्रभु कुंवर लाडले यह यशोमति नन्द दुलारो री।

ननदी दरवाजे पर आय अड़ो याको होरी को चसको।
हा-हा खाय खेल मेरे संग अरी ये फागुन दिन दस को।
नजर बचाय अंक भरि लीन्ही याने मिस कर उर मसको।
सूरदास यह रसिक शिरोमणि अरी यह भोगी या रस को।

छैला मेरी गागर उतार ए जी लहजो दै चढ़ती जवानी को ॥
हम तो आये दूर ते हे कोई रंचक पानी प्याय।
हमरो पानी विष भरयो है पीवै सो मर जाय।
जो तेरो पानी विष भरयो है कैसे पीवै बलम भरतार।
छोरा हमरो तो घर को गारुड़ी हे पीवे लहर उतार।

चहुंदिसि नदियां रंग सों भरीं हो, डगर निकसन को नाय रही ॥
मै दधि वेचन जात वृंदावन चखि, लेत गुपाल गलिन में दही।
वरज रही बरज्यौ नहि मानै, प्यारी ऐसो ढीढ यही ॥
कहत ग्वालिनी सुनि री यशोदा मै तो, बैयां पकरि के करूँगी सही।
चन्द्रसखी के रसिक विहारी मेरी हंसि हंसि बांह गही ॥

बरजो यशोदा जी कान्हा ॥

मैं जमुना जल भरन जात ही मारग निकस्यो आना
बरजत ही मेरी गागर फोरी ले अबीर मुस्काना
सखी सब दैहैं ताना ॥
मेरो लाल पलना में झूले बालक हैं नादाना
ये क्या जाने रस की बतियां ये क्या जाने खेल जहांना
कहाँ तुम भूली बहाना ॥
सूरदास ब्रजवासिन त्यागे ब्रज से अनत न जाना
करो अपना मनमाना ॥

छैल रंग डार गयो मेरी बीर ॥

भीज गयो मेरो अतलस रोटा हरित कंचुकी चीर।
डारै कुमकुम ताकि कुचन पै ऐसो निपट बेपीर।
ललित किशोरी कर बरजोरी मलत गुलाल अबीर।

रंग डारत नन्द को लाल ॥

ऐसो भयो सखी सुघर खिलारी मारग रोक ठडो बनवारी।
देखो मेरी आली ऐसों निठुर वा बाल।
मारत तान कनक पिचकारी गेरत दृगन अबीर।
मोसो करे बरजोरी मले मुख में गुलाल।
परसै सकल अंग गिरधारी वासुदेव मर्याद बिसारी।
ब्रज बल्लभ (सों) हारी सब ब्रज की बाल।

आय गई री होरी खेलन हारी ॥

नारों झुब्बादार कमर में लंहगा चूनर सारी।
रसिया भंवर बन्यो मंडरावै बच रही है चम्पे की डारी।
होरी में ये हाथ परी है मारै भर भर रंग पिचकारी।

रस को कूर कहा पहिचाने ॥

चढ़ गयी महल अटा भई ठाढ़ी तक तक गोदा तानै।
रसिया फूल बन्यो गेंदा को जाय गुबरैटी में सानै।
पुरुषोतम याय नीचे लै ले तब मेरो मनुवा मानै।

म्हारे होरी को त्यौहार ननदुल बैर परी ॥

होरी गावत धूम मचावत एरी मोहन आये हैं हमारे द्वार।
मोपै रह्यो नहिं जात मंदिर में वाके सुन ढफ की धधकार।
देख्यो मैं चाहत नंदनंदन को एरी वो तो भेरत कुटिल किवांर।
जा दिन ते गौने हम आई वाको वाई दिन को व्यवहार।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि एरी मैं तो मिलि हौं गलभुज डार।

लाल रसमातो खेलै होरी ॥

वो तो होरी के मिस आवै मेरी गलियन धूम माचवै
करै बरजोरी ॥
वो तो केशर माट घुरावै मो पै भर भर लोटा ढारै
करे सराबोरी ॥
वो तो ठाढ़ो कदम की छैया मेरी पकर मरोरी गोरी बैयाँ
झटक लर तोरी ॥
वो तो चन्द्रसखी को प्यारो जशुदा को राजदुलारो
मटुकिया फोरी ॥

मनमोहन री रिझवार एरी तेरे नैन सलोने ॥
तू अलबेली आन गाँव की अब ही आई है गौने री।
मनमोहन तेरे द्वारे ठाढ़े तू धसी बैठी है कोने री।
होरी के ढफ बाजन लागे तू गहि बैठी मौने री।
दया सखी या ब्रज में बसके नेम निभायो कोने री।

हो बिहारी सब रंग बोर दई ॥
सुई सी सारी कसूमल अंगिया अब ही मोल लई।
देखेगी मेरी सास ननदिया होरी खेलत नई।
चले जाव पिया कुंजबिहारी जो कछु भई सो भई।

आज श्याम मग धूम मचाई धूम मचाई करत ढिठाई।
बिन रंग डारे देत नहिं निकसन मैं तेरी सों देखि कै आई।
तू कहूँ भूल कै मति उत जैयो जाने कहा वह करे लंगराई।
नारायण होरी के दिनन में अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई।

चौकि परी गोरी होरी में श्याम अचानक बांह गही री ॥
सम्हरि छुड़ाय रीसाय चढ़ी भ्रू अनषि अधर कछु बात कही री।
चितै-२ हँसीकै बसिकै कसिकै भुज में रस रास लही री।
श्री कुंजलाल हित बाल जाल छवि ख्याल रसालहिं देख रही री।

मनमोहन आवनहार होरी खेलूंगी ॥
उबटन मज्जन कर लियो सजनी नव सत साज समार।
हाथन मेंहदी पांय महावर कजरा लियो लगाय।
बेसर को मोती अति सुंदर सोंधे बींधे बार।
भामर सो फिरबोई करत है यह तेरो रिझवार।
दया सखी घनश्याम लाल कौ करि राख्यो हियहार।

राधावर खेलत होरी ।।

नंदगाँव के गवाल इतै-उत बरसाने की गोरी
डफ करताल बजावत केसर कुमकुम घोरी
परस्पर रंग में बोरी।
गावत गारी गंवार मनो नव नागरि जोबन जोरी
नन्द को लाल बडो रसिया है हम ते करत कछु जोरी
फागुन में कौन की जोरी।
दसहु दिस में गुलाल घुमड़ रह्यो काहू न लख न परयो री
औचक धाय चली चन्द्रावली ललितादिक सब दोरी
गह्यो कुंवर बरजोरी।
मोर मुकुट वन माल मुरलिका पीताम्बर लियो छोरी
भामिनी वेष बनाय कहत है नंदराय की छोरी
बनी छवि काम करोरी।
दे दे तारी नचावत ग्वालिन अपनी-२ ओरी
वा दिन की सुधि भूले लल्ला यमुना तट चीर हरो री
आज सखी दाव परोरी।
कृष्ण रंग फगुवा जो भामतो देकर बहुत निहोरी
ह्वै अधीन वृषभानु सुता के बिनती करे करजोरी
देउ अपनों कर छोरी।

अरे हेला वे डफ बाजें पियारी के, वा श्री वृषभानुदुलारी के, कीरतिजा रूप उजारी के, धुनि सुनि उर चौंप बढ़ी भारी ।।

रंग रंगीली अलीं संग लिये फूलि रही छबि फुलबारी।
अरे हेला छाइ रह्यौ अनुराग रंग गावैं मैंन मद सनी रुचिर मारी।
दया सखी घनश्याम लाल कह्यौ नर्म सखन सो चलो जाइ देखैं
अपने प्राण की निज है जियारी।

फाग लगौ जब ते मोरी आली बांके सामलिया ने धूम मचाई ॥
अटकत निडर नन्द को नटखट लोक लाज कुल कान गंवाई।
बैयाँ मृदुल पकरि झक झोरत मांगत दान जोबन मुसकाई।
खेंची दुकूल मलत मुख रोरी होरी के मिस अंक लगाई।
पैज परी उत वासुदेव सों सास ननद इत करत लराई।

छैला ये आज रंग में बोरो री एरी सखी लग्यौ हमारो दाव ॥
फेंट पकर याके गुलचा मारो पैयां परै तब छोरो।
हरे बांस की बांसुरिया याकी लैके तोर मरोरो।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि याही ते यारी जोरो।

रंग बरसै रे गुलाल बरसै राधा रानी हमारी पै रंग बरसै ॥
रंग बरसै रे गुलाल बरसै मोहन प्यारे हमारे पै रंग बरसै ॥
(अरी रंग बरसै कहुं दामिनी बरसै, और बरसै कस्तूरी)

होरी खेलन दै मेरी बीर-बीर मेरी ननदी ॥
ढफ मुरली ऊधम सुन मेरो जियरा धरे न धीर।
जान दीजिये यह रस लीजै मेरी नेक करो न पीर।

छैला ये आज रंग में बोरो री एरी सखी लग्यौ हमारो दाव ॥
केशर घोर याके अंग लगावो कारे ते करो गोरो।
जिन्ही भुज गिरिराज उठायो तिन भुज पकरि मरोरो।
आनंद घन याहे पकरि नचावौ हा-हा खाय तो छोरौ।

तेरी होरी खेलन में टोना मैं तो नई आई श्याम सलोना ।

तैने कैसो खेल रचायो मानो दुल्हा ब्याहन आयो ।
जो खेलै सो होय बराती यहीं ब्याह यहाँ गौना ।
चौबा चन्दन अतर अरगजा लिये अबीर भर दोना ।
काहे बैठी है ओट मुंड़ेली मैं तो नई-२ नार नवेली ।
अब तुम हमसों खेलों होरी फिकर काहू की करोना ।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि होनी होय सो होना ।

होरी में मेरे लग जायेगी मत मारै नैन कटार ।।

भले ही रंग तू डार लै पर घूंघट नेक उघार ।
प्रेम सों होरी खेल लै अरी सुन अलबेली नार ।
हियरा को घायल करै तेरे बिछुवन की झनकार ।
हिल-मिल होरी खेलले आज कर मोहन सों प्यार ।
ब्रज कौ राजा सांवरो कोई रानी राधे कुमार ।
फेंटन झोरी गुलाल है ह्वां मच रह्यो धूंआधार ।
फगुवा लेउ मन भांवतो तुम सगरी ब्रज की नार ।
मोहन फगुवा बांटते कोई कृष्ण दास बलिहार ।

पानीरा भरन कैसे जाऊं मेरे राम पनघट पै ठाढ़े श्याम ।।

सज मतवारो सांवरो रे रसवादी है याको सबरो गाम ।
गावैं बजावैं प्रेम सों रे मुरली में लै-२ मेरो नाम ।
राह रोक ठाढ़ो भयो रे मारग में निरखै मेरी झांघ ।
जुगल रूप छवि छैल की रे मन अटक्यो है सागर के मांझ ।

अरी नाय मानै रे नाय मानै रे अनोखो छैल लंगर नाय माने रे ।।

मेरे पिछवारे ते आवै रे अरी मोय दै – दै सैन बुलावै रे ।
मेरे अगवारे ते आवै रे अरी मेरे अंगना धूम मचावै रे ।
मोय औचक नींद न आवै रे अरी सुपने आय जगावै रे ।
होरी खेलन के मिस आवै रे अरी वो भर भर गडुवा ढ़ारै रे ।
मैं कैसे करूँ कित जैये रे अरी रस सागर बीच लुभैये रे ।

मदमातो फागुन जाए तनक गोरी रसिया सों बतराय लीजौ ।।

यह जोबन दिन चार को है दो-दो नैना ते नैना लडाय लीजौ ।
सास ननद कों डर मत करियो घूंघट में बतराय लीजौ ।
रसिया कौ रस भरयो ही डोलै छतियां सो लिपटाय लीजौ ।
फगुना में केला लै आयो चुपचाप अँधेरे में खाय लीजौ ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु सों तन की तपन बुझाय लीजौ ।

इक चंचल नारी अटा चढ़के मेरे मारी दुबारा धर के ।।

काहे की याने चोट चलाई काहे को बल करके ।
नयन बान की चोट चलाई जोबन को बल करके ।
काहे को याने कोप करयो है काहे को मन करके ।
प्रेम रूप को कोप कियो है मिलवे को मन करके ।
चन्द्रसखी कौ नेह जुरयो है श्याम सुंदर सों अरके ।

स्याबास रंग में बोरी अंगिया गरक रही ।।

चोबा चन्दन अतर अरगजा केसर गागर घोरी ।
लै पिचकारी सन्मुख मारी भीज गई सब चोली ।
छतियां हाथ लगावत धरकी चुरिया मेरी करकी ।
सास बुरी घर ननद हठिली देखें सखी बगर की ।
लै रोरी गोरी मुख मांड्यो होरी नये बगर की ।
लाल जाऊं बलिहार तिहारी बात बनी घर घर की ।

गोरे अंग गुवालिनी गोकुल गाम की ॥

लहर-लहर जोबना करै हो थहर-थहर करै देह।
छतिया धुकर-पुकर करै बाको नयो रसिक सों नेह।
कुबरा कौ पानी भरै गोरी नवि -२ लेजू लेय।
घूंघट दाबै दांत सों ये गर्व न उत्तर देय।
पहरे नौतन चूनरी लावन लई सकोरी।
अरग थरग सिर गागर वह चितै चली मुख मोरि।
चाल चलै गज हंस की ऊँची नीची दीठि।
ओढ़न के मिस मुरक के नेक हरि ही दिखावै पीठि।
ठमकि चलै मुरि-मुरि हंसै गोपी फिर-फिर ठाढ़ी होय।
घायल सी घुमत फिरै याको मर्म न जानै कोय।
तिलक बन्यौ अंगिया बनी वाकी पायल की झनकार।
बड़े बगर ते नीकसी ह्वां श्याम खरे दरबार।

गोविन्द यदुबीर मेरे मन बस्यो है गोविंदा ॥

वृंदा विपिन सुहावनो कोंहके जंह मोर।
कोयल बोले शब्द भरी सुन नन्द किशोर।
सांवरो धेनू चरावे यमुना के तीर।
मुख ते वेणु बजावे हलधर यदुवीर।
आपन बैठ कदम पै ग्वाला दिये हैं सिखाय।
दोनाई दोना लै गये दधि दई है लुटाय।
राधे अटरिया चढ़ गई खिरकिन दे ओट।
सांवरे हाथ मुरलिया सब दल की ओट।

रंगरेज गमार अंगिया रंग नाय जानै ।।

याही अंगिया कुही लिख दै याही में लिख दै बाज ।
याही में मोरा लिखदै कोंह्के दिन रात ।
याही अंगिया में कुआ लिख दे याही में लिख दे बाग ।
याही में माली लिखदे सींचे दिन रात ।
याही अंगिया में पलंग लिखदे याही में लिखदे मोय ।
याही में बलमा लिख दै जब ढ़ोरुंगी ब्यार ।
याही अंगिया चौपर लिख दै याही में लिख दे गोर ।
याही में कांसे लिख दै खेलैं दिन रात ।

बलमा परदेश होरी का संग खेलूं ।।

काहे की तेरी अजब कटोरी काहे कौ तेल फूलेल ।
रूप की मेरी अजब कटोरी जामे तेल फुलेल ।
गोरी के अंगना बाग बगीचा फूल रही फुलवार ।
गोरी के अंगना कलियाँ कैसे तोरूं फूल रही फुलवार ।
गयो परदेश देवर घर वारो लोग धरें सतभाव ।
घूँघट कैसे खोलूं ?

इक चंचल देखी हो प्यारे मार गई सैनन में ।।

स्यालू सरस रेसमी लंहगा हीरा लगे लामिन में ।
शीशफूल माथे पै बेंदा सुरमा लगे आँखिन में ।
गोरे हाथ रचाय लई मेंहदी बरहा परे हाथन में ।
हार हमेल गुदी खगवारो डूब रही सब धन में ।
वन के से टेंट कदम के से ढोटा फूल रही जोबन में ।
गजनिन मार गई सैनन में ।

जान दे रे तेरे पांय परत हौं रे कन्हैया ॥
टूट गये हार छूट गये अचरा भींजि गई अंगिया रे दैया।
या मग मांहि न कर बरजोरी हैं गोकुल के लोग चबैया।
नागरिया धनि रीत तिहारी धनि यह खेल धनि तुम खिलबैया।

हम आई बरसाने वारी निकल छैल नन्द गैंयां रे ॥
ऊबट बाट नचायो बहुत दिन अब क्यों नार नवैया रे।
कै तो निकस के होरी खेलो कै परो प्यारी जू के पैयां रे।
यह कह नागर घेर लई सब अबीर गुलाल उड़ैया रे।

मदन मोहन की यार भोरी गूजरी ॥
मदन मोहन याको भोरो भारो गूजर असल छिनार।
लंहगा याको घूम घुमारो चूनर बूंटेदार।
मदन मोहन बिन और न भावे वो याकी रिझवार।

मत रोके मेरी गैल लड़कवा जान दै ॥
अब कोई कैसे निकसैगी नित ही मारग रोकै।
या ब्रज में बस ढ़ीठ भये हो मांगत दान दधी कौ।
जाय कहूँ जसुमति के आगे तेरो कान्ह लड़ेरो।

देखूं तेरो हाथ दरद कैसो ॥
तू गोरी जोबन मदमाती दरद नांय ऐसो वेसो।
नस – २ को मैं दरद निकासूँ मैं नाय वैद ऐसो वेसो।
दया सखी फागुन के महीना वैद मिलो मन को जैसो।

ये कैसो ऊधम गार याको पीतांबर छोरौ री ।।

आज हमारो दाव बन्यो है देखो कैसो आज सज्यो है।
ठकुराई लेओ निकार याको रंगन में बोरो री।
सब मिल पकरी नन्द को लाला मगन भई सब ब्रज की बाला।
हंस देवे गुलचा मार राख्यो हरि करि कै चेरो री।

रंग में रंग दई बांह पकर के लाजन मर गई होरी में ।।

इकली भाज दई होरी में हुरमत लाज गई होरी में।
चटक दार चोली में सरवट पर गई होरी में।
चूनर रंग बोरी होरी में पिचकारी मारी होरी में।
ह्वै के श्याम निशंक अंक भुज भर लई होरी में।
गाल गुलाल मल्यो होरी में मोतिन लर तोरी होरी में।
लोक लाज खूंटी पै कान्हा धर दइ होरी में।
बरजोरी कीन्ही होरी में ऐसी बुरी भई होरी में।
घासी राम पीर सब तन की हर लइ होरी में।

होरी खेलन आयो श्याम आज याहे रंग में बोरो री ।।

कोरे -२ कलश मंगावो वामे केशर घोरो री।
लोक लाज कुल की मर्यादा फागुन में तोरो री।
मुख ते केशर मलो करो कारे ते गोरो री।
हाथ जोर के करे बीनती याकी तनियाँ तोरो री।
सब सखियाँ जुर मिलके याकूँ मग में घेरो री।
रतन जटित पिचकारी याके सन्मुख छोरो री।
हरे बांस की बांसुरिया याहि तोर मरोरो री।
चन्द्रसखी यो कहे आज बन आयो भोरो री।

मैं तो सोय रही सपने में मोपै रंग डारयो नन्दलाल ॥

सपने में श्याम मेरे घर आये ग्वाल बाल कोउ संग ना लाये।
टटोरन लाग्यो मेरे अंग पौढ़ पलका पै मेरे संग।
करन लाग्यो जोबन सों जंग पिचकई मारी भर -२ रंग।
पिचकारी के लगत ही मो मन उठी तरंग।
मानो मिसरी कंद की घोंट पी लई भंग।
घोंट पी लई भंग गाल कर दिये गुलालन लाल।
हंसि -२ के मोहि कंठ लगाई मानो कुछ मोय दौलत पाई।

खुले सपने में मेरे भाग मनों मेरी गई तपस्या जाग ॥

हंस खूब मनाय रही फाग रसीली जुरी हमारी लाग।
हंस-२ फाग मनाय रही चरण पलोटत जाय।
धन्य-२ या रहन कूं फिर ऐसी नाय पाय।
फिर ऐसी नाय पाय भई सपने में मालामाल।
इतने में खुल गये मेरे नयना देखूँ तो कछु लेन न देना।
परी पलका पै मैं पछतात मैं दोनों मलती रह गई हाथ।
जो सपनो देख्यो मैंने रात अधूरी रह गई मन की बात।
मन की मन में रह गई हौन लग्यो परभात।
बजत गजर के फजर ही तीन ढाक के पात।
तीन ढाक के पात रही कंगालन की कंगाल।

छैला मेरी जोट मिलाय लीजो ॥

जो रसिया मोय गुट्टी जानो फीता ते नपवाय लीजो।
जो रसिया मोय हलकी जानो कांटे पै तुलवाय लीजो।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण को मन की हौंस बुझाय लीजो।

होरी को बन्यो खिलार हरि कौ सब सखियो घेरो री ॥
बहुत बार याने मटकी फोरी दीखै जहाँ सांकरी खोरी।
यानै बहुत कियो बिगार याकी बंसी मिल चोरौ री।
याद करो जब चीर चुरायो ऊपर चढ़ि गूँठा दिखरायो।
कैसे जाय छुप्यो कोने में मेरी चोली पै रंग डार।
बहुत दिना ते तुम मनमोहन फाग ही फाग पुकार।
आज देखियो खेल फाग को रंग की उड़त फुहार।
बहुत अनीति उठाई तुमने रोकत गैल गिरार।
आज नन्द के खबर परेगी झोरी भरी गुलाल।
बाजे सभी बजाओ सजनी ढफ मृदंग करताल।
माधुर-२ बंसी बाजे मुहचंग और सितार।
नारायण न बहुत इतराओ आवो भवन के द्वार।
बहुत ही नाच नचायो हमको तुम चित चोर मुरार।

अरी वह नन्द महर को छोहरा बरज्यो नहिं माने ॥
प्रेम लपेटी अटपटी और मोहि सुनावे दोहरा।
कैसे के जाऊं दुहावन गैया आय अघोरे गोहरा।
नख शिख रंग बोरे और तोरे मेरे गरे को डोरा।
गारी दे दे भाव जनावै और उपजावे मोहरा।
गोविन्द प्रभु बलबीर बिहारी प्यारी राधा को पति मनोहर।

सगरी रात श्याम सों खेलूं चन्दा छिप मत जैयो रे ॥
फागुन कौ अवसर मनमानो होरी को है खेल सुहानो।
अलबेलो साजन मस्तानों।
अरे नन्द के छैल आज कहूँ भाज न जैयो रे ॥
चोट दऊँगी मैं भी ऐसो भूल जायगो ऐसो वेसो।

वन के डोले छैला कैसो।
पतरी सी मत जानै छलिया भज मत जैयो रे॥
अड़के होरी मैं खेलूंगी लठिया मार ढाल तोरुंगी।
गुलचन गाल लाल कर दूंगी।
गली सांकरी छेड़-छाड़ को फल तू पैयो रे॥

आज खेलूंगी तुझसे होरी तैने चूनर भिगोई है मेरी॥
तू है नंदगाँव का ग्वाला मैं हूँ बरसाने की छोरी।
तू है नामी लुटेरा माखन का आज मरजादा मैंने भी तोरी।
रोका रस्ते को सांकरी खोरी आज तुझको बनाऊंगी गोरी।
तेरी आँखों में लगाऊँ सुरमा रेख कजरा बनाऊँगी थोरी।
खोल पीताम्बर अपनी कमर से लंहगा पहनाऊँगी कसके डोरी।
बातों ही बातों में पकड़ जो लिया सिर पै रंग की है गागर ढोरी।
लाल की पाग रंग में है बोरी है उड़ाई गुलाल की झो़री।

आँखों में रंग डार पिया कहाँ जायेगा
पकड़ी मैंने फेंट भाग नहीं पायेगा॥
बहुत दिनों तक चोरी करके माखन खाया नीयत भरके।
भरे हैं पोट गुलाल मार तू खायेगा॥
तेरी चाल छुड़ाऊँगी मैं सीधा आज बनाऊँगी मैं।
दूंगी गुलचा गाल मजा तब आयेगा॥
कहाँ गये तेरे सब ग्वाला करते सब माखन का घुटाला।
तुमको दूंगी बाँध न कोई छुड़ाएगा॥

काजर वारी गोरी ग्वार या सांवरिया की लगवार ।।
निसिदिन रहत प्रेम रंग भीनी,हरि रसिया सों याने यारी कीनी ।
मदन गोपाल जानि रिझवार,नाना विधि के करे सिंगार ।।
मिलन काज रहे अंग अगोछे,सरस सुगंधनि तेल तिलौछें ।
अंजन नाहिं भटू यह दीये,स्याम रंग नैनन में लियें ।।
गायन को यशुमति गृह आवें कृष्ण चरितहिं गाय सुनावें ।
सुंदर श्याम सुनें ढिंग आई, चितवत ही चितवत रहि जाय ।।
राम राय प्रभु यों समुझावे, भगवान तू नीके गावें ।
लखि घनश्याम कियौ निरधार, यह लगवारिन वह लगवार ।।

होरी में कैसे बचेगो ये जोबन तेरो ।।
जो कहूँ दृष्टि परैगी श्याम की संग लै तोय नचैगो ।
अब की फागुन तेरेई बगर में होरी रंग मचेगो ।
छैल बड़े छल चितवन चोरे नैनन बीच डसेगो ।
गोकुल कृष्ण की लगन यही है तेरे ही भवन बसेगो ।

श्याम के मैं अंक लगूंगी कलंक लगै तो लगौ री ।।
अंक लगे बिन पलछिन न रहूंगी सिर तोप दगे तो दगो री ।
लाज तजू ग्रह काज तजुंगी घर सास लड़े तो लड़े री ।
रसिक प्रीतम गुरुजन सिर ऊपर धार परै तो परो री ।

फाग खेलन कैसे जाऊं सखी री हरि हाथन पिचकारी रहत है ।।
सबकी चुनरिया कुसुम रंग बोरी मोरी चुनरिया गुलनारी रहत है ।
कोई सखी गावत कोई बजावत हमको तो सुरत तिहारी रहत है ।
कहत है कासिम अपनी सखी सों सैंया की सुरत मतवारी रहत है ।

बहुत बड़े हैं उत्पात नन्दलाल के,
भाज गयो श्याम मोपे आज रंग डार के ।।
परसों की बात कहुं सुनो नन्द रानी,
मैं तो गई थी भरवै जमुना को पानी,
चारों तरफ से घेरयो संग ग्वाल बाल के ।।१।।
पकर जो पाऊँ वाको ऐसो मैं हाल करूं,
दे दे गुलचा वाके दोउ गाल लाल करूँ,
मोसों बरजोरी करे बीच ब्रजबाल के ।।२।।
और एक बात कहूँ सुनो मेरी मैया,
पाय अकेली श्याम लागे मेरी पैयां,
कहत न आवै याके घात है कुचाल के ।।३।।
एक दिना मिल्यो सांकरी गली में,
बरबस लै गयो गह्वर वन में,
झटक-२ तोरी लरी मोती माल के ।।४।।

जुग-२ जीयो होरी खेलन हारी ।।
दसवें महीना तेरे छोरा हूजो धरियो नाम हजारी।
जो रसिया मेरे छोरा होयेगो दूँगी पात तिहारी।
बूरो ऊपर लौनी दूंगी आलू की तरकारी।

छैला मन बस में करैगी ।।
लै लै लाल गुलाल मलेंगे, गोल कपोल सहैगी
तक तक तेरे उंचे कुचन पर, कुमकुमा मार मचैगी
मौज सब तन की लुटैगी ।।
तो चूनरि औ पीताम्बर की, पिय संग गाठ जुरैगी
नागरीदास बीच सखियन के, मोहन संग नचैगी ।।
स्वाद रस को समझेगी ।।

री ठाड़ो नंददुलारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ।।

गिरि को उठाय भये गिरिधारी इंद्र मान कियो भंग ।
री यह ब्रज रखवारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ।
गौतम नारी अहल्या तारी कुब्जा को कियो संग ।
री प्रहलाद उबारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ।
द्रुपद सुता को चीर अक्षय कियो उघरन न दियो अंग ।
री यह द्वारका वारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ।
पुरुषोतम प्रभु की छवि निरखै केसर घोरो रंग ।
री मनमोहन प्यारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ।

रंग बिन कैसे होरी खेलै री या सांवरिया के संग ।

कोरे-२ कलस मंगाये विन में घोरो रंग ।
भर पिचकारी संमुख मारी मेरी चोली है गई तंग ।
ढोलक झांझ मजीरा बाजै सारंगी मृदंग ।
सांवरिया की बंसी बाजै राधा जू के संग ।
लंहगा रंग मेरी चूनर रंग दइ रंग दियो सारो अंग ।
श्याम सुंदर की कारी कामर चढ़े न दूजो रंग ।
राधे सब सखियन सों बोली घोर लेवो बहु रंग ।
देखै कैसे सांवरिया पै चढ़े न दूजो रंग ।
भरि पिचकारी श्याम पै मारी चढ़यो न कोई रंग ।
मोहन ब्रज गोपिन सों बोले रंग भयो बदरंग ।

होरी न खेलूं न खेलूं तोते रसिया ।।

तन को कारो मन कों कारो घूँघट कैसे खोलूं ।
बहियाँ पकर कुञ्ज लै जावै तेरे संग न चलूं ।
होरी मिस यारी जोरै मन की भेद न खोलूं ।

जब सों धोखो दै के गयो श्याम संग नाय खेली होरी ।।
मथुरा जनम लियो हरिराई गोकुल जाय चराई गाई,
लूट-२ दधि खाय करी याने माखन की चोरी ।
ऊधो जी तुमकूँ समझाऊँ एक दिना की बात बताऊँ,
जमुना न्हायवे गई घेर लई गोपन की छोरी ।
अब तो निठुर भये बनवारी गोपिन की सुध नाय संवारी,
कुब्जा के संग रमे छोड़ दइ राधा सी गोरी ।

या ब्रज में कैसी धूम मचाई ।।
इतते आई कुंवरी राधिका उतते कुंवर कन्हाई ।
खेलत फाग परस्पर हिलमिल यह छवि बरनी न जाई ।
बाजत ताल मृदंग झांज ढफ मंजीरा शहनाई ।
उड़त गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई ।
पकरो री पकरो श्याम सुंदर को यह अब जान न पाई ।
छीन लेओ मुरली पीताम्बर सिर पर चूनर उड़ाई ।
बेंदी भाल नयन बिच कजरा नख बेसर पहराई ।
कहाँ गये तेरे पिता नन्द जू कहाँ गई यशुमति माई ।
कहाँ गये तेरे सखा संग के कहाँ गये बलदाई ।
धन गोकुल धनि-२ वृन्दावन धन यमुना यदुराई ।
राधा कृष्ण युगल जोरी पर नंददास बलि जाई ।

हेली ये डफ बाजै छैला के, मनमोहन रसिया नागर के,
वा जुलमी औगुन गारे के,धुनि सुनि जिय अति अकुलाय गई ।।
कहा कीजैरी आवत उमगि हियो निधि ज्यों अब कापै रोक्यौ जाइ दइ ।
उर गुरु जन की लाज दहति उर धरि नहिं सकिये देहरी पाइ ।
दया सखी अब होइ सु हूजौ मिलों घनश्यामहि धाइ ।

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई ।।
नंदनंदन को राधे कीनो माधव आप भई
सखा सखी भये सखी सखा भये जसुमति भवन गई।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ नाचत थेई – २
गोरे श्याम सांवरी राधे यह मूरति चितई।
पलटयो रूप देख जसुमति की सुध बुध बिसर गई
सूर श्याम को बदन विलोकत उघर गई कलई।

कन्हैया रंग तोपै डारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।।
पहली पिचकारी तेरे माथे मारै,
बिंदिया की सुरंग बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै।
दूजी पिचकारी तेरे अँखियन मारै,
कजरा की रेख बिगारैगो सखि घूंघट काहे खोलै।
तीजी पिचकारी तेरे मुख पै मारै,
नथली की गूंज बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै।
चोथी पिचकारी तेरे छतियन मारै,
चोली की चटक बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै।
पांची पिचकारी तेरे पायन मारै,
लंहगा कौ घूम बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै।
छटी पिचकारी तेरे पायन मारै,
बिछुवन कौ घोर बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै।
साती पिचकारी तेरे सबरांई मारै,
जोबन कौ फूल बिगारैगो सखि घूंघट काहे खोलै।

होरी तोते न खेलूं श्याम रसिया ॥

घूँघट में पिचकारी मारे बेंदी की चटक बिगारै रसिया।
नैनन में पिचकारी मारे कजरा की रेख बिगारै रसिया।
होठन में पिचकारी मारै नथली की गूंज बिगारै रसिया।
छातियन में पिचकारी मारै चोली की चटक बिगारै रसिया।
घुटुमन में पिचकारी मारै लंहगा की घूम बिगारै रसिया।
कान्हा पिचकारी मत मारै चूनर रंग बिरंगी होय।
चूनर नई हमारी प्यारे हे मनमोहन वंशी वारे।

इतनी सुन लै नन्द दुलारे ॥

पूछेगी वो सास हमारी कहाँ ते लई भिजोय ॥१॥
सबको ढंग भयो मतवारौ, दुःख दायी है फागुन वारो
कुलवंतिन कौ औगुन गारौ,
मारग मेरौ अब मत रोकै मैं समझाऊँ तोय ॥२॥
बहु विधि विनय करै सुकुमारी, आड़े ठाड़े हैं गिरिधारी
बोले मीठे वचन बिहारी,
होरी खेल अरी मन भाई फागुन के दिन दोय ॥३॥
छांड दई रंग की पिचकारी, हंस -२ के रसिया बनवारी
भीज गई सबरी ब्रजनारी,
ग्वालिन ने हरि को पीताम्बर छोरयो मद में खोय ॥४॥

पकरो – पकरो होरी खेलन ते नंदलाला भाग्यो जाय ॥

पहले याने चोट चलाई तान दई भर के पिचकारी
भर के फेंट गुलाल उड़ाई,
अब भाग्यो है पीछो करके याको लेओ घिराय ॥१॥

बड़ो खिलार बन्यो नन्दगैंया नित-नित ऊधम नित लंगरैयां,
छोड़ो मत चाहे परे ये पैंया,
छल बलिया है बहुत दिना ते हाथ परयो है आय ।।२।।
सब मिल पकर लई गिरिधारी जुर आई सब ब्रज की नारी,
बंसी छीन लई है प्यारी,
बंसी रही बजाय राधिका सब मिल श्याम नचाय ।।३।।

जानी – जानी तेरी लगन लगी है ।।
मौहे सोंह है नन्द के घर की मोहन रंग रंगी है।
नैन उनींदे लगत सोहने सबरी रात जगी है।
यह प्रताप होरी को गोरी कुल की कानि भगी है।

कैसी होरी बिरज में आय लगी ।।
(कान्हा) होरी को आयो मोर मुकुटधर द्वारे पै धूमस होन लगी।
कोई एक गाबै डफहि बजावै मेरी छतियन धक-२ होन लगी।
होरी में आग लगी न लगी मेरे जियरा में नेह की आग लगी।
होरी खेलन मैं तो बाहर आयी मेरे गाल गुलाल की मूठ लगी।
मैं तो भाजी मोय पकर वह बोल्यो मेरी तोते गोरी लगन लगी।
कैसी होरी कैसी लगन मैं तो खीझी जोरा जोरी छोड़ हाथ मैं घर में आय लगी।
पीछे-२ चलो आयो वैरी सामइ आयो पैयां पर वाकी हा हा होन लगी।

गोरी चूनर कुसुम रंगाय लै री ।।
अंगिया लाल कसुमी लंहगा काजर नैन लगाय लै री।
सीस फूल बेंदी माथे पै चोटी फूल गुंथाय लै री।
गोरे गालन झुमका बेसर मोती नाक सजाय लै री।
हाथन कंगन और आरसी चूरी हाथ चढ़ाय लै री।
तोसी न नागरी मोसों न रसिया जिय की हौस मिटाय लै री।
पांय पकरि तेरी वीनती करत हौं हंस के अंक लगाय लै री।

ढफ धरि दै यार गई पर की ।।

खेलत फाग थकित भई ग्वालिन मेंहदी मलिन भई करकी।
क्षेत्र छोडि भाग्यो है रति पति मुरकी अनी कुसुम शर की।
पुरुषोतम या होरी खेल में जीत भई राधावर की।

कान्हा ते कैसे खेलूंगी मैं होरी ।।

सबरे ब्रज में धूम मचाई लै मेरो नाम बकै होरी।
नई-नई मैं आयी नवेली कबहुं न खेली ब्रज होरी।
होरी के हुरियारे छैला जान न देवै कोई गोरी।
कैसे बचेगी या होरी में पीहर की चूनर कोरी।
पोटन भरे गुलाल छैल सब लै लै माटन रंग घोरी।
ऐसी होरी जरे निगोरी बाहर भीतर रंग बोरी।
होरी में बरजोरी करके सबकी लाज मटकी फोरी।
रसियन के छल बल नहिं जानूँ दांव पेच में मैं भोरी।

होरी खेल न जाने रे कन्हैया मेरी चूनर भीजैगी दैया।

अबही मोल लइ मनमोहन सास लरै घर सैंया।
नगर चबाव करै नरनारी तेरे परूँ मैं पैंया।
ब्रजदुलह होरी खेलि न जानै बहुत करै लरकैंया।

बसंती रंग में बोर दै रे। चुनरिया मेरे छोरा रंगरेजवा ।।

मेरी चुनरिया मेरे पिया की पगरिया एकइ रंग में झकोरि दै रे।
अब के फागुन मेरे पिया घर आवै सौतिन कौ मुख मोरि दै रे।
विष्णुदास मुंह मांगे दाम लै औ चरण कमल चित चोरि दै रे।

आज मोहि नटवा की होरी खिलाई नट नागर के मन भाई
इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीच में जमुना बहाई ॥
भरि पिचकारी सन्मुख मारी नेक लाज नाय आई ॥१॥
मैं जमुना जल भरन जात ही मारग रोक्यो है आई
सिर पै ते मेरी गगरी पटकी बैयाँ पकरि घुमाई ॥२॥
वंशी वट पर वंशी बजाई लै लै नाम बुलाई
वृन्दावन में रास रच्यो है दै दै तारि नचाई ॥३॥
पिचकारिन कौ बांस गाढ़ि कै तापै मोय चढाई
ब्रजनिधि रसिया मानत नाहीं सौर कला खवाई॥४॥

मैं दधि बेचन जात वृन्दावन चखी लेत गुपाल गलिन में दही ॥
बरज चहुँ दिसि नदिया रंग सों भरी हो,डगर निकसन कों नाय रही
रही   बरज्यो नहिं मानै प्यारी ऐसो ढ़िठ यही।
कहत ग्वालिनी सुनि री जसोदा मैं तो बैंया पकरि के करूंगी सही
चन्द्रसखी के रसिक बिहारी मेरी हंसी – २ बांह गही।

तेरी होरी खेलन में टोना मैं तो नई आई श्याम सलोना ॥
कर मेरो पकरि करैया मोरी या होरी में कछु होना।
रात -२ भर होरी गावै नाचै मटक हसौना।
चन्द्रसखी फागुन के महीना नाय मानै नंदजू कौ छौना।

मेरे नैनन में डारयो है गुलाल सजनी
मलत -मलत हुई अँखियाँ लाल ॥
मचि रह्यो फागु भानु पौरी पै खेलत मदन गुपाल।
चोवा चन्दन अतर अरगजा छिरकत पिया नन्दलाल।
ग्वालबाल सब सखा संग लै घेरी लई ब्रजबाल।
अबीर गुलाल फैंट भरि लीने तकि मारे करि ख्याल।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि चिरजीवो दोउ लाल।

मोहन मुदरी लै गयो री मेरी आछी ननद सटकारी री ननदिया ।।

हाथन की मुदरी लइ मेरो और गरे हार
वास न वसिये नन्द के रे मेरी कोई नाना सुनै पुकार।
लै गयो तो लै जान दै जाने मेरी बलाय
पीहर जाऊं बाप के रे और लाऊँ गढ़वाय।
दया सखि घनश्याम लाल कौ बाढ़्यो है रंग अपार
चरन कमल के आसरे रे तन-मन-धन बलिहार।

एरी होरी कों रसिया रस लोभी निकसन देय न बाट ।।

भर – भर रंग सबै तन ढारे यह ऊधमी विराट।
कर डफ लै कछु ऐसौ गावै सुनि जिय होत उचार।
वृन्दावन हित रूप मांगि सुख लिख्यो विधि श्याम लिलाट।

अनौखो छैल मेरे आवै रे ।।

धमकि अटा चढ़ी आवै रे एरि मोय ओचक आय जगावै रे।
सूनी बाखर आवै रे एरि मोय दे दे सैन बुलावै रे।
केसरि रंग बनावै रे एरि मोपै भरि-भरि गडुवा ढ़ारै रे।
ठोर कहाँ जंह जैये रे रस सागर बीच लुभैये रे।

खेलौ बलदाऊ जी सों होरी ।।

वे तो कहिये ब्रज के राजा फगुवा लैन चलो री।
फागुन में हिय उमगि भरयो है मन भावै सोई करौ री।
लाज सब दूर धरो री ।।
चोवा लाओ चन्दन लाओ अबीर बनाओ भर झोरी।
बैंया पकरि के याहि नचाओ (याकि) मुख ते लगाय देओ रोरी।

हाल ऐसो ही करो री ॥
कहत मुकुंद बार नाय कीजै पकरि लेउ बरजोरी।
कोई काजर कोई बेंदी लगाओ (याके) सेंदुर मांग भरो री।
नील पर धूरि धरो री ॥

तेरो गोरो बदन और जुबना नयौ होरी में कैसे बचैगो ॥
एक डर लागत है वा दिन को जा दिन रंग रचैगो।
चोवा चन्दन अतर अरगजा तोपे अबीर गुलाल परैगो।
कहत ग्वालिन सुनि री सहेली तेरे अंगना में श्याम बचैगो।

पानीरा भरन कैसे जाऊं री मोपै मांगै जुबनवा कौ दान ॥
ढपै बजावै गारी गावै लै लै कै मेरो नाम।
या ब्रज की कछु उलटी रीति है मेरो बाहर परत न पाम।
या माधव ते कैसे बचूंगी रसवादी है गोकुल गाम।

क्या करै अनोखे बान रसिया होरी में ॥
एक मार रंग की पिचकारी दूजै नैन कटार।
एक मार मीठी मुसकनकीदूजै अलबेलो सिंगार।
एक मार मीठी बंसी की दूजै नूपुर की झनकार।

कोउ भलो बुरो जिन मानो रंगन रंग होरी है।
मोहन के मन मोहन कौ श्री वृषभानु किशोरी है।
होरी में कहा -२ कहियत है यामे कहा कछु चोरी है।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु सों जो कछु कहौं सो थोरी है।

बावरी बन आई तोय होरी कौन खिलाई ।।

नैनन में चकडोर फिरै तेरे घूँघट में चतुराई ।
सास कहै मेरी वारी सी बहुरिया अंगिया कहाँ दरकाई ।
चंचल चपल मयंद गयन्दनि घूमत-घूमत आई ।
हार डोर की सुधि नाय सजनी किन लालन बिरमाई ।
सास कौ पूत ननदिया कौ वीरा जिन मेरी छोर उड़ाई ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि हरषि – २ गुण गाई ।

मनमोहन की रिझवार प्यारी तेरे नैन सलोने ।।

तू अलबेली आन गांव की अब ही आई गोने ।
सौंह दिवाय कहौं (नेहर) पीहर की पग जिन धरौ अगौने ।
आज होरी गोरी तेरेइ बगर में केते कौतिक होने ।
साँची सखि सुनि नंदनंदन की रूप रंग गुण औने ।
जब लगि परस कुटिल भृकुटी तट मटकत टावक टोने ।
अब तू साधि सखि घर ते में नेम धर्म व्रत मौने ।
चन्द्रसखी या गोकुल बसिके नेम निभायो कौने ।

आय गयौ-३ रे होरी में कन्हैया ।।

वा दिन भाज लियो होरी में लठामार ते नन्दगैया ।।होरी में ..।।
एक दिना मेरो घूंघट खोल्यो, और करी याने लंगरैया ।।होरी में..।।
पनघट पे ये नित हि अटके,गगरी फौरे लुढकैया ।।होरी में ..।।

सानूदा होरी खेलदा नही जानदा ।।

लंगर लंगर लंगराई करि कै, साड़ा मुख पर चादा भरि ।
पिचकारी देता गारी टेड़ी करि तानेदा ।
चोबा चन्दन और अरगजा लै मुख ते सानेदा ।
हाय दई कैसी भई नहीं आनंद घन मानैदा ।

सांवरो अजहूँ नाय आयौ ॥

छाड़ दई मधुवनी श्याम ने मधुपुरी जाय के बसायौ
दासी जाय करी पटरानी   गोपीनाथ नाम लजायौ
कंत कुब्जा कौ कहायौ ॥१॥
लै पतिया छतिया कौ जरावै ऊधौ संदेशा लायौ
कहा कहुं यह मित्र विश्वासी कैसो संदेशौ लायौ
हलाहल घोरि पिलायौ ॥२॥
एक दिना बात सखी री जसुदा हाथ बंधायौ
जो न होती हम ब्रज ग्वालिन हम नेई आनि छुड़ायौ
लाल द्वै बापन जायौ ॥३॥
भूषण वसन उतारि सखी री अंग विभूति रमायौ
हार उतार पहिर लिये मुद्रा सींगी नाद बजायौ
फाग में अलख जगायौ ॥४॥
धन मथुरा धनि-धनि वृन्दावन धनि जहाँ रास रचायौ
ब्रज प्रताप यह अटल बनी रहौ करत आप मन भायौ
श्याम चेरी ने बिरमायौ ॥५॥

सब दिन की अब कसक निकारों,
पकर लियौ सब लिपटैयाँ ॥ **होरी में ..॥**

घेर लियो सबने मनमोहन,श्याम गये अब पकरिया ॥होरी में ..॥
गुलचा गाल दिए मन भाये,बरज रही कीरति मैया ॥होरी में ..॥
छल बल ते नहिं छूट सको तुम,परो किशोरी के पैयां ॥होरी में ..॥
छूटे पांय पकर गिरधारी,ठुमका दे रहे नचकैयाँ ॥होरी में ..॥

सब की चोट निशाने पै ॥
नैन बान चहुँ घाते छुरैं चंद्रका मिली इक बाने पै।
लाखन हू की भीर जुरी है अति लोचन सरसाने पै।
या नागर ते सब ब्रज अटक्यो सो अटक्यो बरसाने पै।

प्यारी बिहारी लाल सों रस होरी खेलैं ॥
लटकीली गज चाल सों, बुका बंदन मेलैं ॥
जोबन जोर उमंग सों रति रंगहि रेलैं।
लै पिचकी कर कमलन सों पिय तन पर पेलैं।
अति निसंक लच लंक सों भरि अंक सके लैं।
गहि गाढ़ी आह्लादिनी आनंद अलबेलैं।
अतर ले तन तार करी नव तिया नवेलैं।
सग बग कीनी ढारी कै सीसी जु फुलेलैं।
चहल पहल भई महल के या बगर बगेलैं।
श्री हरि प्रिया जे धन्य हैं ते यह रस झेलैं।

रसिया केसर की बूंदन में अंगिया किन रंग दीनी रे ॥
देखेंगी मेरी सास ननदिया यह कहा कीनी रे।
चोवा चन्दन और अरगजा सोंधे भीनी रे।
रसिक प्रीतम अभिराम श्याम सो भुज भरि भेंटी रे।

गोरी होरी तो खेल घूँघटवारी। घूँघट वारी बिछुवा वारी ॥
मत छेड़ श्याम गिरवर धारी। गिरवर धारी ओ बनवारी ॥
रंग भरी ये होरी आयी,भागन ते इकली पाई।
अरी हम जोरेंगे तोते यारी, गोरी .... ॥
तेरी होरी बारह मासी, हमरी तो है जावे फांसी।

सब देखेंगे ब्रज नर-नारी, मत छेड़ श्याम गिरवर धारी .... ॥
बात बनाय रही है प्यारी, होरी को त्यौहार मना री ।
रसियन को ये सुखकारी, गोरी होरी तो खेल घूँघट वारी .... ॥
देख गैल ते हट बजमारे, रोके मत ओ रूप बावरे ।
भंवरा सी प्रीति तेरी कारी, मत छेड़ श्याम गिरवर धारी .... ॥
चम्पकली सी नार नवेली, होरी खेलेंगे अलबेली ।
प्यारे कों रस प्यारी प्यारी, गोरी होरी खेल घूँघट वारी .... ॥
काहे पाँय परै रसदानी,मानमंदिर की टेव पुरानी ।
मत ब्यार करै तोपै वारी, मत छेड़ श्याम गिरवर धारी .... ॥

बह जायगी काजर धार न मोपै रंग डारो ।
सास सुनैगी मूसर मारै,नई बहुरिया बादर फारै ॥
वो तो गारी दैगी हजार,न मोपै .... ॥
ननद लड़ै औ लड़ै जिठानी कहाँ भई यह ऐंचातानी
मेरी चूनर डारी फार ----------------॥
कह्यो गूजरी श्याम सुंदर सों फिर जीतूंगी काउ जतन सों
मोपै होरी रही उधार ----------------॥

गोरी – २ गुजरिया भोरी सी प्यारी तैं मोहे नन्दलाल ॥
खेलन में हो -२ जु मन्त्र पढ़ डारयौ तै जु गुलाल ।
(तेरी)सोंधे सनी अंगिया उरजन पै औ कटि लंहगा लाल ।
उघर जात कबहुंक चलगत में जेहर ढिंग ऐड़ी लाल ।
(तू) सकल त्रियन में यों राजत है ज्यों मुक्तन में लाल ।
न्याय चतुर्भुज कौ मन मोह्यौ अधर सुधा रस लाल ।

छबीली नागरी हो धन तेरो परम सुहाग ।।
तेरेइ रंग रंग्यौ मन मोहन मानत है बड़ भाग ।
आज फवी होरी प्रीतम संग लखियतु है अनुराग ।
जय श्री रूपलाल हित रूप छके दृग उपमा कों नहि लाग ।

होरी खेलन की चौंप हो निस नींद न आवै ।।
श्याम सलोना रूप रिझौना मुरली टेर सुनावै – हो निस नींद न आवै
मेरे बगर मंडरावै वाते खेलूंगी उघर बनावै – हो निस नींद न आवै
कहा करैगी सास ननदिया सब त्यौहार मनावै – हो निस नींद नआवै
आनंद घन गुलाल घुमड़न में करि हार हिये में रखावै – हो निस नींद

गोहन परयो मेरे २ सांवरो सलोनों ढोटा गोहन परयो ।।
याकी घाली मेरी आली कहौ कित जाउं ।
बांसुरी में (गावे वह)—(गारी गावे) लै लै मेरे नाउं ।
सांवरे कमल नैन आगे नेकु आई ।
लाजन के मारे (मोपै) कहूँ गयो न जाई ।
जौ हौं चितऊँ आड़ो दै दै चीर ।
सैननी में कहै चल कुञ्ज कुटीर ।
अंगना में ठाड़ी हू अटा चढ़ि आवै ।
मुकुट की छहियाँ मेरे पाइनि छुवावै ।
हित घनश्याम मिलोगी धाई ।
सांवरे सलोने बिन रह्यो न जाई ।

रूप दुरै किहि भांति री, तू कहै क्यों ताहि उपाय (सजनी) ॥

घूँघट में न छिपात सखी मेरे गोरे बदन की कान्ति ॥
बरज रही बरज्यो ना मानै कौन दई संजोग री
मैं तरुणी या ब्रज के सबरे भये बावरे लोग री ॥
मोहन गोहन लाग्योइ डोलै प्रगट करत अनुराग री ॥
अब नागर डफ बाजन लागै सिर पर आयो फाग री ॥

गोरी तेरे नैना बड़े रसीले ॥

विहंसि उठत निरखि मेरो मुख घूँघट पट सकुचीले (रसीले) ।
फागुन में ऐसी ना चहिये ये दिन रंग रंगीले ।
ललित किशोरी गोरी खंजन बिन अंजन कजरीले ।

बैंयां झकझोरी मोरी रे, खेलिये न ऐसी होरी श्याम ॥

मानो जू छबीले छैला खेलिये ना ऐसी होरी
परसत कुच मोहे जान लंगर भोरी ॥ खेलिये न ऐसी होरी .....
रंग पिचकारी मारी चूनरी बिगारी सारी
चल रे अनारी काहे मलत कपोल रोरी ॥ खेलिये न ऐसी होरी .....
भरिये न अंकवारी दूंगी मैं प्यारे गारी
सरस विहारी तोसों हारी कहूँ कर जोरी ॥ खेलिये न ऐसी होरी ॥

कान्हा निलजी गारी जिन दै री ॥

अबहूँ हारी हाहा तोसों, नेक लाज मुख लै रे ।
अब या गली बहुरि नहि अैहौं सौं बाबा की है रे ।
नागरिया ब्रजवधू भिगोई होरी मांझ सबेरे ।

राधा मोहन खेलत फाग (री) ॥

रंग गुलाल वसन तन सनि रहे, हिये सनि रहे अनुरागऊ।
सखिनु समाज चहुँ दिसि राजत फूल्यो सोभा कौ बाग।
वृन्दावन हित रूप छके रस मदन केलि उर लाग री।

ये गोरी अनमोल गोरी याते न बोल ॥

जावक पांय चुटलि गौने की तुम चाहत कछु और होने का
जाउं बलिहार परे को डोल -२ देख याते .... ॥
होरी खेलन कीजो तेरे मन में जोबन जोर भरो तेरे तन में
तो आओ सखियन के टोल -२ देख याते............. ॥

होरी को खिलार कर लिये डफहि बजावै होरी की ॥

पान भरे मुख चमकत चौका अरु देये बैंदा रोरी की।
रातो लंहगा तनसुख सारी कहा कहौ छवि या गोरी की।
कठिन कुचन पर उकसती अंगिया आहि मनो रति की जोरी की।
चोवा की बेंदी तुईयन पर अरु अचरा की ढिंग थोरी की।
नीवी खुभी जू रही है नाभि पर अरु कसि गांठि दई डोरी की।
भरती न डरति आंख आंजती है करत दुहाई किसोरी की।
नन्दलाल कौ गारि देती है हंसि ग्वालिन सों गठ जोरी की।
जोवन रूप बनी सु बनी मनो है वृषभानु गोप ओरी की।
हो हो हो कहि सुघर राय प्रभु नैन सैन दै चित चोरी की।

रंगभरी होरी खिलाय ले ओ होरी के रसिया ।।

होरी के रसिया प्यारे नन्द जू के छैया, फागुन खूब मनाय ले ।
फगुना में मैं नथनी लूंगी, नथनी में फूलना डलाय दे ।
शीशा जरी आरसी लूंगी मुख अपनों दिखराय दे ।
१६ लर की लऊँ कौंधनी रौना हू लटकाय दे ।
पायल लूंगी बिछुवा लूंगी बिछुवा में घुंघरू जड़ाय दे ।

होरी आज खिलाय ले ओ रंगभरे रसिया ।।

रंग भरे रसिया जसुदा जी के छैया अपनी हौस बुझाय ले ।
रंग भरी पिचकारी लै के रंग की धार चलाय ले ।
चोवा चन्दन अगर कुमकुमा कस्तूरी लिपटाय ले ।
रंग बिरंग गुलाल की पोटै बादर सी घुमड़ाय ले ।
जो कछु होवै तेरे मन में आपनो जोर जमाय ले ।
नैनन ते मुसकाय सलोने हँस -२ भरे लगाय ले ।

निलजी गारी जिन दै रे अरे कान्हा ।।

अबहूँ हारी हा हा तोसों नेक लाज मुख लै रे ।
अब या गली बहुरि नहि अइहौं सौं बाबा की है ।
नागरिया ब्रजवधु भिगोई होरी मांझ सबेरे ।

चाहे रुठै सब संसार खेलूंगी होरी श्याम ते ।।

चाहे सास रुठै चाहे सुसरो रूठे चाहे रूठ जाय भरतार ।
चाहे ननद चाहे नंदेऊ रूठै चाहे गारी मिलै हजार ।
चाहे जेठ रूठे चाहे जिठनी रूठे चाहे बकै सबै ब्रजनार ।
चाहे सबरो गांव चबाव करै ये तो है गई फरिया फार ।
चाहे नगर निकासो है जाय मेरो चाहे दीजो मोपै भार ।
भर होरी में मिलै श्याम सों छोडूं रंग की धार ।

मनमोहन नन्द डुठोना ।।

होरी में आयो बरसानो, सुंदर श्याम सलोना ।
कीरति जू हंसि लियौ अंक भरि जसुमति जू कौ छोना ।
भोजन सुहथ कराई नेह युत सीतल जल जु अचौना ।
ललितादिक लै चली खिलावनि जहां दाइजे गौना ।
रंग गुलाल बगेलत खेलत राधा संग नचौना ।
गारी गावति सखी लडावत होरी छंद रचौना ।
ललकत वलकत रस छकि घूमत उर सुख मुख गह्यौ मौना ।
कीरति दुरि निरखति मन हरषित हिय सुख सिंधु बढ़ौना ।
वृन्दावन हित रूप आसीसत ये दोऊ लाड़ खिलौना ।

तो पै होरी में किशोरी रंग डारैगी ।।

क्यों इतनो इतरावै मोहन सबरी कसर निकारैगी ।
लूट लूट दधि माखन खायो गालन गुलचा मारैगी ।
तक तक के मारै पिचकारी अबीर गुलाल उड़ावैगी ।
नंदनंदन तारी बजाय के सखियन बीच नचावैगी ।
श्याम सुंदर आज तोहि पकरैगी घिस घिस अंग निखारैगी ।
पुरुषोत्तम प्रभु होरी खेलौ तन मन सब तोपै वारैगी ।

होरी रे होरी रे होरी रे होरी रे ।।

इत ते आये कुंवर कन्हैया इतते राधा गोरी रे-३ होरी रे
बाजत ताल मृदंग झांज डफ और नगारे की जोरी रे-३ होरी रे
उड़त गुलाल लाल भये बादर मारत भर भर झोरी रे-३ होरी रे

आज श्याम तुम खेलों मोते होरी ।।
माथे चमक रही है बिंदिया घूँघट बचाय तुम खेलों मोते होरी।
नैंनन नहनो कजरे की रेखा कजरा बचाय तुम खेलों मोते होरी।
आजहूँ ओढ़ी नई चुनरिया चुनर बचाय तुम खेलों मोते होरी।
स्यालु सरस रेशमी लंहगा लंहगा बचाय तुम खेलों मोते होरी।
नई नई होरी में आई लाज बचाय तुम खेलों मोते होरी।

मैं तो होरी खेलन जाऊं मेरी बीर नांय माने मेरा मनुवा।
होरी को अलबेलो छैला मैं तो वाते नेह लगाऊँ मेरी वीर।
भर पिचकारी रंग की मारूं मैं तो अबीर गुलाल उड़ाऊँ मेरी वीर।
ऐसो रंग डारुं कारे पै मैं तो गोरो आज बनाऊँ मेरी वीर।
दै गुलचा सीधो कर डारुं मैं तो सबरी टेढ़ निकारुं मेरी वीर।
चीर हरन को बदलो लूँगी,मैं तो पीताम्बर छुड़ाऊं मेरी वीर।
हरि को नंगो कर होरी में मैं तो नैनन नैन लडाऊं मेरी वीर।

उंगरी पै नाच नचाय दूंगी मोय जानै ना सांवरिया ।।
जो मोपै तू रंग डारैगो भर गागर रंग डारूंगी।
जो मेरे गाल गुलाल मलैगो तो गोरो तोय बनाय दूंगी।
जो अंगिया ते हाथ लगायो तो नंगो कराय दूँगी।
जो चूतर तू मेरी पकरै गुलचा गाल लगाय दूंगी।
तोय करूँ होरी को भड़ुवा गलियन मांहि फिरा दूंगी।
खेल रहे रंग होरी उनके दौऊ नैना खेली रहे रंग होरी।

श्याम पुतरी श्याम भई ज्योत भई राधे भोरी ॥
बाल समान अबीर उड़ावत भर पलकन की झोरी खेल रहे।
वृषभानु भवन की पौरीन में होरी खेलै सांवरो।
ब्रज की वधू सब जुर मिलि आई लिये रंग कमोरिन में।
चोवा चन्दन और अरगजा अबीर लिये भर झोरिन में।
ब्रज दूलह यह छैल अनोखौ दाव लग्यौ भर कौरिन में।

होरी तो खेल मतवारी गुजरिया भागन ते फागुन आयो गुजरिया।
रूप की तू देवी ओ हम हैं पुजारी तू है बड़ी दाता ओ हम हैं भिखारी
भीख दै दे ठाड़े हैं तेरी डगरीया॥
राजी ते खेल लै ओरी दीवानी ना तो करेंगे ऐंचातानी
फारेंगी तेरी ये लाल चुनरिया॥
बचके न जावेगी ओरी छबीली ऐसी मिली जैसे मुहरन की थैली
खोल भण्डार तेरी लचकै कमरिया॥
गोरे गाल गुलाल लगाय ले मेरे दुपट्टा ते पीक पौंछ ले
ढ़ार ले तू मोपै रंग की गगरिया॥
घूंघट में ते मोहडो चमकै बिंदिया तेरी दम दम दमकै
छूरी कटारी है तेरी नजरिया॥

सांवरे ने गारी दई मैं तो लाजन मारी रही॥
गारी की गारी ताने के ताने एक की लाख कही।
होरी की भीर में आय अचानक बैंया मेरी गही।
भर पिचकारी छतियन मारी अंगिया गरक रही।
घूंघट खोल गुलाल मल्यो मेरे गालन बरज रही।
बरजोरी कीनी नटखट ने मैंने पीर सही।
आग लगै या होरी में याने बहुतै बुरी कही।

भायेली मोय बताय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ।।
जग में होरी ब्रज होरंगो हांसी सी ठट्ठा ओ हुरदंगो
भायेली सीख सिखाय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ।।
भीतर रहूं तो हेला देवै बाहर जाऊं तो होरी गावै
भायेली अकल बताय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ।।
गैल गिरारे खेलै होरी छतियन पै मारै पिचकारी
भायेली गैल दिखाय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ।।
बड़ो छैल नन्द को उतपाती गरे लगावै लिपटै छाती
भायेली याय बताय ब्रज में गुजारो कैसे होय ।।

होरी में काहे भागे अरे लगवाय लै कजरा नन्द जू के ।।
काजर तोय लगाऊं ऐसो तिलक लगावै तू सज के जैसो ।
छैला आपनो साज आज सजवाय ढोटा नन्द जू के ।।
बहुत दिना तक मटकी फोरी बहुतै करी तैने माखन चोरी ।
अपनी सबरी करनी को फल पाय ले लाला नन्द जू के ।।
भर भर डारूँ रंग कौ गडुवा तोय करूं होरी को भड़ुवा ।
बन्यो ठन्यो डोलै रसिया रस पाय ले लाडले नन्द जू के ।।

नंदगाँव अनौखौ नन्द को जहां चपल चबाई लोग ।।
निपट अभेंड़ो सावऐ हँस कै लगावै दोऊ नैन,
रोके टोके गैल में मोतै बोलै रसीले बैन ।।
पनघट पै ठाडो रहे भर -२ देय उचाय,
व्यार चलै ऊचए उड़ै मेरो हियरा लेत लुभाय ।।
जैये तो रहिये कहाँ यह सुख और न ठौर,
होरी को धूमस रहै नित नन्दभवन की पौर ।।
कान काहू की नाय करै याको रसिया सबरौ गाम,
सागर के हिय में बसै यह मूरत घनश्याम ।।

तेरे जोवन कौ मनमोहन है रिझवार ।।

रूप सलोनी तू गजगौनी रूप जोवन दिन चार ।
भांमर सी फिर बोई करत हौ यही तेरो व्यवहार ।
दया सखी घनश्याम लाल सो मिलिये गल भुज डार ।

चल बरसाने खेलैं होरी ।।

ऊंचो गाम धाम बरसानो जहाँ बसै राधा गोरी ।
उत ते आये कुंवर कन्हैया इत आई राधा गोरी ।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक देखन आये रंग होरी ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु सों फगुवा लियो भर भर झोरी ।

अलबेली के यार सोहे कजरा ।।

सोहे सरस सलोनो कजरा परे भुजन पीरे अंचरा ।
राधा नैन बने दोउ तोता मोहन नैन बने पिंजरा ।
प्रेम रसिक प्यारी मुख मोडयौ हंसि मुसक्याय दियौ कजरा ।

सब की यह चोट निशाने पै ।।

नैन बान छूटे चहुँ धाँ ते, मनु लोचन सरसाने पै ।
लाखन हू की भीर जुरी है, चंद्रकला वर बाने पै ।
या नागर ते सब ब्रज अटक्यौ , सो अटक्यो बरसाने पै ।

अंगिया दरक रही मेरी ---- जोवना तेरी ओट ।।

सुन रे दरजिया के छोरा घुंडी लागी महराज ।
एक तो पान ते पतरी हूँ सोलह लगे कहार ।
एक तो मैं जोवन माती दूजै सैंया नादान ।
एक तो मैं राजा की बेटी दूजै भई बदनाम ।

वारे की नारि झूला नीम किन दयौ ॥

झूला पै ते गिर परि याको यार गयो बलखाय।
हाथ टटोरे पाम टटोरे याको यार गयो मुरझाय।
हाथ न हाले पाम न हाले छतिया ते लइ चिपकाय।

होरी खेलत बिछुवा खोयो लीजो लीजो रे छैल ढुन्ढ़वाय ॥

कै भूली तेरी सेज पै काऊ सौत ने लियौ चुराय।
खोय गयो तो खोय जान दै नयो दऊं गड़वाय।
बिछुवा रतन जड़ाव कौ तेरो सबरो गांव बिक जाय।

लगन तोते लग गई रे अरे लगवार ॥

धमकि अटरिया चढ़ी गई वही ते रिपटयो पाँव किवरिया खुल गहेरे।
चढ़त अटरिया हाकिम देखी उतरत देखी कोतवाल उजागर है गई रे।
५०० रुपैया हाकिम मांगे १० मांगे कोतवाल बदरिया फट गई रे।
५ रुपैया याके यार ने दीने १० में बिक गई भैंस रसायन पर गई रे।

रसिया मेरी लहर उतार रस तो लै दोनू नैनन को ॥

गोरी जो तेरी लहर उतारहौं रंचक मोय पानीरा प्याय।
लाला हमरो पानी रा विष भरयो पीवै रे गरद है जाय।
गोरी जो तेरो पानीरा विष भरयो तेरे घर को कौन हवाल।
लाला हमरे घर को वायगी पीवे रे नेक लहर उतार।
रसिया मेरी गागर उतार जोर जरन लागी जेहर की।
लाला इखने चढ़ दुखने चढ़ी तिखने रे मोपै चढ़यो न जाय।
गली-२ डोलै वैद्य कौ या वैदे रे नेक उरे बुलाय।
वैद कूं डार खुटोलना मुड़ला पै बैठी आय।
नारी टटोरै बैद कौ तेरे विरह बिथा रही आय।
मैं अच्छी होनी नही अपयस आवै तोय।
रसिक छैल होरी में भेटूं तव कल आवै मोय।

नथ कौ तोता बोलै तेरी ॥
उड़ तोता होंठन पै बैठ्यो दोनूं गाल मरोरै ।
उड़ तोता हियरा पै बैठयो चोली के बन्दा खोलै ।
उड़ तोता पेड़ूं पै बैठयो पचमनिया सो पोवै ।

सुन सांवरा यार तेरा बिरज जाने कैसा ॥
तेरे बिरज में कुआ बावरी तेरे बिरज में सागर ताल ।
तेरे बिरज में तबला सारंगी तेरे बिरज में बजै सितार ।
तेरे बिरज में नीबू नारंगी तेरे बिरज में पके अनार ।
तेरे बिरज में गैया बछरा तेरे बिरज में दूघ की धार ।
तेरे बिरज में होती बरजोरी तेरे बिरज में अंचरा फार ।

सारे बरसाने वारे, रावल वारे सारे सब ॥
जगन्नाथ के नाती सारे वे बरसाने वारे ।
डोम ढ़ड़ेरे सब ही सारे और पतरा वारे ।
बाग बगीचा सब ही सारे सारे सींचन वारे ।
बिरकत और गुदरिया सारे लम्बे सुतना वारे ।
बाबा जी भानोखरि सारे चौके चूल्हे सारे ।
अहलायत महलायत सारे गैल गिरारे सारे ।

बलि छलन चलो त्रिलोकी ॥
चरनन पहरे चरन खड़ाऊं, सिर पै पचरंग टोपी ।
हाथ में लै लई ब्रह्म लकुटिया, बगल में भगवंत पोथी ।
बलि राजा के द्वारे जाय के, बात कही इक मोटी ।
तीन पेड़ पृथ्वी दे राजा, कुटिया बनाऊं छौटी ।

तेरी मेरी है जोरी आजा खेलै हिलमिल होरी
तेरी मेरी का जोरी कान्हा तू कारो मैं गोरी ॥
द्वै -२ तेरे बाप कहत हैं नन्द वासुदेव कई जोरी।
मैया ते जा पूछ पिता को, गोकुल की या मथुरा को री।
नन्द जसोदा गोरे (सुनियत) लाला तू क्यों कारो भयो री।
कहा खोट मैया में कैसे कारो तोहि जन्यो री।
घर – २ डोलै उझकत (२)तू तो कर तो डोलै चोरी।
नार पराई तकतो डोलै चाहे न्याही क्वारी छोरी।
नंदगांव के चोर ग्वारिया, (सब मिल) लूटै भरी कमोरी।
लठमार में लट्ठ परै जो (सवरी) भूल जाय बरजोरी।
ऐसोइ भंग घोटा तेरो भैया (दाऊ) भंगड़ धत्त परो री।
कोड़न की जब मार परै तब हा हा खावे होरी।

बलि मत दै दान जिमी को ॥
याय छोटो मत जाने राजा, यू छलिया है देय दिनी को।
याई ने मोरध्वज छल लियो धारो रूप तपसी को।
याई ने हरिश्चन्द्र छल्यो जाने भरो नीर भंगी को।
याई ने हरनाकुस मारो वन के सिंह बनी को।
याही ने रावन को मारो जोधा लंकपुरी को।
तुलसी दास आस रघुवर की चरन कमल चित नीको।

पांडो कर गये राज धरम को ॥
कौरो पांडो चौपर खेलै पासो परयो करम को।
कूआ हाट बावरी हारे ऊपर पौधा वर को।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि, ध्याव धरे गिरिधर को।

हरि तेरो पार न पायो ॥

मथुरा में हरि जनम लियो है गोकुल में भयो बधायो ।
नन्द बाबा घर कन्या जनमी वसुदेव कुंवर कहायो ।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त – २ गज हारो ।
जौ जौ भर सूंड रही नल ऊपर जब हरि नाम संवारयो ।
गज की टेर द्वारका में लागी नंगेई पामन धायो ।
ग्राह मार धरती पै लाये जब गजराज उबारयो ।

जिन जैयो रे गोरी तू पनघट ॥

दुस्मन नैन मरखने तेरे वो रसिया नन्द को नटखट ।
जो घूँघट पट ओट करेगी रसिया चोट करे परघट ।
रसिक बिहारी जू की नजर बुरी है कर डारै छिन में चटपट ।

मो मन यह व्यापी पकर मोहन पें वैर लेहूँ ॥

सब सखियन में छिप जो चलों पाछें ते दौरी जाय अंजन देहूँ ॥१॥
करगहि पीठ गडाय कुचन सों कान पकर के गुलचा देहूँ
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु पें मनभायो हों फगुवा लेहूँ ॥२॥

हा हा ब्रजनारी आखें जिन आंजो ॥

जो आंजो तो आप आंजिये, और हाथ जिन देहो
हांसी हानि दुहूँ विध जोखो,समझ बूझे किन लेहो ॥१॥
सुनहें मेरे सखा संग के, हसहस देहें तारी
बड़े खिलार कहावत हें हरि, आँख कराई कारी ॥२॥
परम प्रवीण जान पिय जिय की, मृदु मुसिकाय निहारी
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु कों, रीझ भरत अंकवारी ॥३॥

नारी गारी दे गई वे माई हो हो होरी आई ।।
मदनमोहन पिय बांसुरी बजाई श्रवण सुनत गृह तज जुर धाई ।।१।।
चंद्रावली अंजन के आई पकर मोहन जू की आंख अंजाई ।
फगुवा बिन दोयें कैसे जे हो धोंधी के प्रभु कुंवर कन्हाई ।।२।।

तुम बिन खेल न रुचे लगार सुंदर यारहो तुमहो सुघर खिलवार ।।
नारि सब मिल गावत आवत, पिचकारीन की ह्वै रही मार ।।१।।
द्वार द्वार फगुवा के कारण करो करो कर रहत ब्रजनार,
अन्तर्यामी आनन्ददाता सूरप्रभु तुम नंदकुमार ।।२।।

होरी हो ब्रजराज दुलारे ।।
अब क्यों जय छिपे जननी ढिंग, द्वै बापन के वारे
कै तो निकस के होरि खेलो, कै कहो मुख ते हारे
जोर कर आगे हमारे ।
बहुत दिनन सों तुम मनमोहन फाग ही फाग पुकारे
आज देखियो खेल फाग कौ, रंग की उड़त फुहारें
चले जहाँ कुम –कुम न्यारे ।
निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे
नारायण अब खबर परेगी, नेक निकस आय द्वारे
सूरत अपनी दिखलारे ।

सुन मोहन रसिया होरी के ।।
ये किवार नहीं खोल सकत कोऊ, बिन कहे भानु किशोरी के ।।
समझति है तुम्हरी चतुराई यह दिन है बरजोरी के ।
हीरा सखी हित कहत न बिसरत, जो तिहारे गुन चोरी के ।।

पल्ले पर गई रंग में रंग दई होरी खेलत रसिया ॥

लहंगा सबरो रंग में में कर दियो रंग दइ अंगिया।
रंग बिरंगी कर के छोड़ी रंग दइ फरिया।
डफ लै होरी गावन लाग्यो दै दै के हंसिया।
हांसी सुन रिस लागै बदलो लूंगी मन बसिया।
रसिया की धोती पकड़ी मैंने मूठन ते कसिया।
धोती फाड़ बनायो कोड़ा पीटयो मन भरिया।
पिट-पिट के हू फाग सुनावै दाऊ को भैया।
ऐसो भयो होरंगो ब्रज में गावै दुनिया।

कंकरी दै जेहर फोरी सबरी भिजई ॥

कंकरी दई दया नाय कीनी, पिचकारी की चोट जो दीनी
भीजी सारी सुरंग नई ....
चकरी सी मोय नाच नचाई, केसर कीच कुचन लपटाई
जो लौं ननदुल आय गई ....
मोहन प्रगट भये ब्रज जब ते, शालिग्राम बौरी भई तब ते
हंस कै गरे लगाय लई ....

जो होरी तू ब्रज में बसैगी ॥

तौ तू कहा लो निशदिन सुन्दरि घर में बैठि रहेगी
भाग सभागे काहू दिना तू, मोहन हाथ परैगी
जान जब तोकूं परैगी ॥
धूम हुरारेन की सुनि सजनी, झमकि अटा पै चढ़ेगी
सुनि-सुनि नाम गारिन में अपनों, तू मुख मोर हंसैगी

मत मारो श्याम पिचकारी, अब दउंगी गारी ॥

भीजैगी लाल नई मेरी अंगिया,चूनर बिगरेगी न्यारी
देखैगी मेरी सास रिसै है, संग की ऐसी है दारी
हंसेगी दै-दै तारी ॥१॥
घाट बाट नित रोकत टोकत, लै-लै रार उघारी
कहाँ लों तेरी कुचाल कहूं में, एक-एक ब्रजनारी
जानत करतूत तिहारी ॥२॥
मूठ अबीर जनि डारौ लालन, दूखैगी आँख हमारी
नारायण न बहुत इतराओ, छांड़ो डगर गिरधारी
नये भये तुमहिं खिलारी ॥३॥

नेह लाग्यो मेरो श्याम सुंदर सो ॥

आई बसंत सवै वन फूल्यो, खेतन फूली सरसों
मैं पीरी भई पियके बिरह सों, निकसत प्राण अधर सों
कहो जाय वंशीधर सों ॥१॥
फागुन में सब होरी खेलैं, अपने-अपने बर सों
पिया के वियोग जोगिन ह्वै निकसी, धूर उड़ावत करसों
चली मथुरा की डगर सों ॥२॥
ऊधो जाय द्वारका कहियो, इतनी अरज मेरी हरि सों
बिरह व्यथा ते जियरा डरत है, जब सों गये हरि घर सों
दरश देखन को मैं तरसों ॥३॥
सूरदास मेरी इतनी अरज है, कृपासिंधु गिरधर सों
गहरी नदिया नाव पुरानी, अबके उबारो सागर सों
अरज मेरी राधावर सों ॥४॥

प्यारे पिया खेलत होरी।

नंदनंदन अलबेलो नागर, श्री वृषभानु किशोरी
परमानन्द प्रेम रस लीने, लिय अबीर भर झोरी
करत मन में चित चोरी ॥१॥
भुजभर अंक सकुच तज गुरुजन, विचरत है मिलि जोरी
छूटी अलक उरझि कुंडल सों, बसर प्रीति फ़स्यो री
चलो सुरझाओ गोरी ॥२॥
कर कंकण कंचन पिचकारी, केशर भर-भर ढोरी
छिरकत फिरत हुलस लिए हरषते, निरखत हंस मुख मोरी
चलो क्यों होइयो बौरी ॥३॥
धन गोकुल धनि श्री बृंदावन, जहां पर फाग रच्यौ री
श्री रस रंग भीजि रहे ब्रज पर, वारों बैकुंठ करोरी
पा लागूं कर जोरी ॥४॥ (श्याम मोसों खेलो न होरी)
जल भरबे कूं घर ते निकसी, सास ननद की चोरी
सिगरी चूनर रंग मे न भिजबो, इतनी अरज सुन मोरी
करो न बहियां झकझोरी ॥५॥
छीन झपट मेरे हाथ सों गागर, नरम कलाई मरोरी
छाती धरकत सांस चढत है, देह कंपति सब मोरी
दुःख नहिं जात कह्यो री ॥६॥
अबीर गुलाल मुखहिं लपटायो, सारी रंग में बोरी
सास हजारन गारी दै है, बालम जियत न छोरी
जिय आंतक दयो री ॥६॥
फाग खेलके तेने रे मोहन, कहा गति कीनी मोरी
सूरदास मोहन छवि लखिके, अति आनंद भयो री
सदा उर बास करो री ॥७॥

श्याम करी बरजोरी, सुरंग चूनर रंग बोरी ॥

आज प्रभात गई दधि बेचन, सिर पर धरी कमोरी
आय अचानक कुसुम छरी कौं मारि मटुकिया फोरी
करी दधि में सरबोरी।
घेरी खड़ो मग संग सखन के, घन बादल दल ज्यों री
धारि सहस धारा पिचकारी, वर्षा करी झकोरी
निठुर केशर रंग घोरी।
मुदु मुसक्यान दशन दामिनि की, दमक दिखाय बहोरी
मेघ समान मधुर भाषण करि, रहसि मली मुख रोरी
लंगर घूँघट पट छोरी।
अंत बसें तजि गांव तुम्हारो, श्री बृषभानु किशोरी
वासुदेब नहिं सही जात है, नित्य अनिति ठठोरी
रहे जाके नित होरी।

श्याम मली मुख रोरी, तनक मुख सों कहो गोरी ॥

चन्द्र समान विमल आनन की, पंकज प्रभा सकोरी
विथुर रही मुख पर ब्यालन सी, अलकावलि चहूं ओरी
मनहुं बल गरल निचोरी ॥
मणि चंद्रिका भई बक्रा गति, कुंकुम भाल दुत्यौरी
गोल कपोलन पै दशनन कौ, उपबन अति दरसौरी

श्रमित जल बिंदु ढलोरी ॥

नवयुग उरज कमल कलिका को, किन करि कठिन मरोरी
गरु सब करी कंचुकी, किन चूनर रंग बोरी
मृदुल बैंया झकझोरी।
लटपट चलत लचक कटि कोमल, गति गयंद तजि भोरी

वासुदेव तेही को ब्रज बल्लभ, निश्चय आज मिल्योरी
नयो यह फाग रच्यौ री
सांवरे मोते खेलो न होरी।
में अबही आई या ब्रज में, करो मती बरजोरी
जल भरबे पठई ननदी ने, यमुना जी की ओरी
मलो न मेरे मुख रोरी।
गैल छैल तजि दीजै अबहो, सासु लरै पिय मोरी
जानि परत छलिया तुम बांके, हम जिय की अति भोरी
छांडी देउ करत निहोरी।
समझति हों तुम ढीट नंद के, करत फिरत दधि चोरी
बहुत अनीति बगर में रोकत, जो निकसति नव गोरी
भली मर्यादा तोरी।
हिरा सखी हित बरजत मोहन, नख सिख लों रंग बोरी
मन आशा पूरण कीनी सब, गागरि सिर ते फोरी
कही जावो गृह खोरी।

स्वाद रस को समझे ॥
रंगन भीजि गई मेरी सारी सुरंग नई।
पहरन काढी ननदूल बरजीं, अब ही मोल लई।
बरज यशोदा अपने लाल कौ, यह सिख कौन दई।
इच्छाराम प्रभु या ब्रज बस के, ऐसी कबहु न भई॥

होरी खेलत कन्हैया मोते झूम-झूम ॥
रंगवारी पिचकारी, धर मारी गिरधारी।
गई भीग सब सारी, मेरी रोम-रोम याते घूम-घूम।
श्याम सुन्दर छैलो रसिया बड़ो रंगीलो।

करत फिरत सैलोरी, ब्रज मच रह्यो री री धूम।
अटी है अटा अटारी, अटी सब ब्रज नारी।
अटी जमुना किनारी, अट गई सब ब्रज की भूमि।
भूमि गलियन गलियन, सखियन सखियन खेलैं।
रंगरंलियन री, सब को मुख ले वै चूम-चूम ॥

अरी चल नवल किशोरी ॥
राधा जू गारी सुनि सुनि हंसि हंसि हरि तन हेरि लज्याइ।
ललन अबीर मरत ग्वालिनि कौ प्रान प्रियाहि बचाई।
और जु प्रेम विवस रस कौ सुख कहत कह्यो नहि जाइ।
जेहि सुख कहिवे कौं कोटिक सरसुती की सुमति हिराइ।
सेस महेस सुरेस न जानै, अज अजहू पछिताइ।
सो रस रमा तनक नहि पायौ, जदपि पलोटत पाइ।
श्रीवृषभानुसुता पद अंबुज जिनके सदा सहाइ।
इहि रस मगन रहत जे तिन पर नंददास बलि जाइ।

अलगोजा श्याम बजायो ॥
काहे को तेरयो बनो अलगोजा, काहे ते जड़वायो ?
हरे बांस को बनो अलगोजा, रतनन ते जड़वायो।
एक दिना गिरिवर पै बाज्यो नख पै गिरिवर धारयो।
एक दिना कालीदह पै बाज्यो नाग नाथ कै डारयो।
एक दिना बरसाने में बाज्यो फाग को खेल रचायो।
एक दिना गहवर में बाज्यो हिल मिल रास रचायो।
इक दिन बाज्यो खोर सांकरी लुट लुट दधि खायो।

मदन मोहन की यार गोरी गूजरी।
सब ब्रज के टोकत रहै, ताते निकसी घूंघट मारि ॥
जो कोऊ झूठे कहे आये मदन मुरारि
रहि न सकै इत उत तकै दुरि देखे बदन उघार ॥
तन सुख की सारी लसै हो कंचन सौ तन पाइ
मनो दामिनि की देह सौ हो रही जोन्ह लिपटाइ ॥
धरति पगति लाली फवै मरै ढरै रित जाइ
काच करौती जल रंग्यौ कहु यहै जुगत ठहराइ ॥
कटि नितंब ढिंग पातरौ हो उरज मार अधिकाइ
लग्यौ लंक मनु लाल कौ वाकी लचकनि लचक्यो जाइ ॥
वरन-वरन पट पलटई हो नूतन-नूतन रंग
तब इत उत निकसत फिरत हरिहि दिखावै रंग ॥
छूटी अलक नैंना बड़े हो, ओप्यो सो मुख इंदु
अरुन अधर मुसकात से दिये, भाल सिंदूर को बिंदु ॥
लगन लगी नंदलाल सों ही करे निर्वाहन काज
चढ्यौ चाक चित चतुर कौ, वाके प्रेमहि आयो राज ॥
लाल लखें लालच बढ़े, उत त्रास पियै पियराइ
यह संजोगिनि विरहिनी ताते, अरुझी बीच सुभोइ ॥
नर नारी एकतं भए हो, मिलि-मिलि करैं चबाव
सिरोमनि प्रभु दोउ सुनै, ताते बढ़े चौगुने चाब ॥

कान्हा पिचकारी मत मारै, चूनर रंग बिरंगी होय ॥
चूनर नयी हमारी प्यारे
हे मनमोहन वंशी वारे
इतनी सुनलै नन्ददुलारे
पूछैंगी वो सास हमारी, कहाँ ते लई भिजोय।

सबकौ ढंग भयौ मतवारौ
दुखदाई है फागुन वारौ
कुलवंतिन कौ औगुन गारौ
मारग मेरो अब मत रोकै, मैं समझाऊँ तोय।
बहु विधि विनय करैं सुकुमारी
आड़े ठाढ़े हैं गिरिधारी
बोलैं मीठे वचन बिहारी
होरी खेल अरी मन भाई, फागुन के दिन दोय।
छाँड़ दई रंग की पिचकारी
हँस हँस के रसिया बनवारी
भीज गयी सबरी ब्रजनारी
ग्वालिन ने हरि कौ पीताम्बर छोर्‌यो मद में खोय॥

चूनरिया रंग में बोर गयौ कान्हा वंशी वारौ॥
चूनर नई बड़ी चटकीली
चटकीलौ रंग घोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
जान न पाई कित ते आयो
औचक ही झकझोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
गालन मल्यो गुलाल निरदई
घूँघट कौ पट छोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
बरजन लगी हाथ पकरे जब
बैंया तनक मरोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
लिपटन लग्यौ नन्द कौ मो ते
हियरे प्रेम हिलोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
खैंचा खैंची करकें छूटी
मोतिन की लर तोर गयौ, कान्हा बंशी वारौ।

ऐसौ रसिया कब मैं देखूँ
छोटो सो मन चोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
होरी खेलन के दिन मोते
डोर प्रीति की जोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ॥

छेड़ै रोज डगरिया में, तेरो ढीट कन्हैया मैया॥
बरस दिना याकी होरी होवै
पूछो सबै नगरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....।
फागुन की तौ कहा बताऊँ
छांड़ै रंग घघरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....।
भर भर फेंट गुलाल उड़ावै
करदे छेद बदरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....।
ऊबट बाट अकेली घेरै
रोकै गली संकरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....।
बैठ कदम पै वंशी बजावै
लै लै नाम बँसुरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....।
भयो दिवानों फाग खेल जाय
देखो गली बजरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....।
कैसे कोई बचैगी याते
डारै जाल मछरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ....॥

या में कहा लाज कौ काज, खेल लै होरी रंग भरी॥
बरस दिना में होरी आई
रसिकन कौ ऐसी सुखदाई
मानो बूढ़े मिली लुगाई
मन की बतियाँ पूरी कर लै, नहिं तो रहैं धरी।

ऐसो समय फेर नाय आवै
भागन ते फागुन रस पावै
नीरस देख-देख खिसियावै
सुनकैं निकर चली वह ग्वालिन मोहन नें पकरी।
लै गुलाल वाको मुख माड्यो
प्रेम बीज हियरे में गाड्यो
रंग बिरंगी करके छाड़्यो
ऐसी दीख रही वह ग्वालिन जैसे फूल-छरी।
पीताम्बर हरि कौ वह पकर्‌यो
रंग भर्‌यो अपनो मुख पोंछ्यो
देखै श्याम प्रेम में जकर्‌यो
तबते नेह जुर्‌यो ग्वालिन कौ गौहन आय परी॥

हरि होरी कौ खिलार आयौ सब मिल घेरो री॥
बहुत बार याने मटकी फोरी
दीखै जहाँ साँकरी खोरी
सबरी घेरीं ब्रज की गोरी
या नें बहुतै कियो बिगार याकी वंशी चोरो री।
याद करो जब चीर चुरायौ
ऊपर चढ़ गूंठा दिखरायौ
सबन हाथ ऊपर जुरवायौ
ये कैसा ऊधमगार मिल पीताम्बर छीनो री।
आज हमारौ दांव बन्यो है
देखौ कैसौ आज सज्यो है
तिलक मुकुट ते खूब फब्यो है
ठकुराई लेओ निकार याकौ रंगन बौरौ री।

सब मिल पकरीं नन्द कौ लाला
मगन भईं ब्रज की सब बाला
मन की करी सबै तिहि काला
हँस देवैं गुलचा मार राख्यौ कर चेरौ री।

अरी होरी में है गयौ झगरौ, सखियन ने मोहन पकरौ ॥
धावा बोल दियौ गिरिधारी
नन्द गाँव के ग्वाला भारी
छाँड़ रहे रंग की पिचकारी
निकसत में रिपटैं सबरौ, सखियन ने ....।
सखियन के संग भानदुलारी
लै गुलाल की पोटैं भारी
मार रहीं हैं भई अँधियारी
ह्वां दीखै नाही दगरौ, सखियन ने ....।
सखा भेष सखियन ने धार्‌यौ
सबही मिलकैं बादर फार्‌यौ
अचक जाय के फंदा डार्‌यौ
छैला कूँ कसकैं जकरौ, सखियन ने ....।
धोखौ भयो समझ गये मोहन
लाईं बरसाने की टोलन
हँस हँस आईं हरि के गोहन
गुलचन ते कर दियौ पतरौ, सखियन ने ....।
मन भाई कर लीनी हरि ते
बतरावैं तीखी आँखन ते
सखि रूप कर दियो पुरुष ते
परमेश्वर कौ झरौ नखरौ, सखियन ने ....॥

मेरी अँखियन में निरदई, श्याम ने मारी मूठ गुलाल ।।
भई किरकिरी आँख हमारी
अचक आयकें घूँघट टारी
पूछन लग्यो कहा भयो प्यारी
मेरी अँखियन पे पीताम्बर मलन लगे गोपाल।
आँखन ते गुलाल काढ़ै वह
फूँक मार रस की बातें कह
चूमै नैंन हटाये हू रह
आग लगै होरी में ऐसो ऊधम ब्रज यहि काल।
या विधि नित ही होरी खेलै
रोकत टोकत ब्रज में डोलै
बिना बुलाए मीठे बोलै
ऐसी बात करै रस की सुन जियरा होय बिहाल।
नन्द महर कौ बड़ौ रसीलौ
नयौ फाग जोबन गरबीलौ
झूमक दै नाँचै मटकीलौ
पाय अकेली संग न छाँड़ै होरी के लै ख्याल ।।

रंगीली होरी आई, धूम मची बरसाने ।।
छैला दूलह आज बन्यौ है
सखा संग लै आय अर्‌यो है
रात दिना को खेल मच्यौ है
नगारिन जोरी आई, धूम मची बरसाने।
ढप बाजत सुन के ब्रजनारी
चाव भई खेलन की भारी

निकर परीं लै भानुदुलारी
रूप की घटा सुहाई, धूम मची बरसाने।
धाय चलीं बिन घूँघट मारै
मतवारी अँचरा न सँवारै
अनवट और बिछुवन छनकारें
लगीं गावन सुखदाई, धूम मची बरसाने।
चढ़े ग्वाल जोवन मदवारे
नाँचैं अखियन डोरा डारे
नेंक न मानैं बकैं उघारे
चली रंगन पिचकाई, धूम मची बरसाने।
लै हाथन फूलन की छरियाँ
लटक लटक के मारैं सखियाँ
सखा बचावैं लै फिरकैंयां
हार ग्वालन नें पाई, धूम मची बरसाने।
कह्यो श्याम ने सुनो रे भैया
बरसाने की चतुर लुगैया
फगुवा देवो घर बगदैया
जीत राधे पै छाई, धूम मची बरसाने॥

मेरे मुख पै अबीर, मेरे मुख पै अबीर, कान्हा ने कैसी मारी।
ये मारी वो मारी हाँ मारी रे॥
काहे की लै लई पिचकारी,
काहे को नीर, काहे को नीर, कान्हा ने ....।
कंचन की लै लई पिचकारी,
रंगन को नीर, रंगन को नीर, कान्हा ने ....।
लाज छोड़ मोय दीनी गारी,

कैसे धरूँ धीर, कैसे धरूँ धीर, कान्हा ने ....।
नरम कलैया पकर मरोरी,
ऐसौ है बेपीर, ऐसौ है बेपीर, कान्हा ने ....।
हार मेरो तोर्‍यो पकर लिपटाई,
मेरो फार्‍यो चीर, मेरो फार्‍यो चीर, कान्हा ने ....।
बीरी लै मुख आप खवावै,
मारै नैनन तीर, मारै नैनन तीर, कान्हा ने ....।
ऊधम पै हू प्यारो लागै,
अचरज मेरी बीर, अचरज मेरी बीर, कान्हा ने ....।
अँखियाँ प्यासी रहैं रैन दिन,
देखन यदुवीर, देखन यदुवीर, कान्हा ने ....।
लाख लोग नगरी बसैं,
सब लागै भीर, सब लागै भीर, कान्हा ने ....।
रसिया बिना लगै सब सूनो,
छेदै शमशीर, छेदै शमशीर, कान्हा ने ....।।

होरी खेलै तो आय जैयौ बरसाने छैला श्याम ।।
मस्त महीना फागुन कौ सुन रसिया नन्दकुमार
मेरौ तेरौ नेह जुर्‍यो है जोवन धूँवाधार
तू साज बाज ते आय जैयो बरसाने छैला ....।
इकलौ इकलौ जो खेलै तो गहवर मिलियौ लाल
रंग बिरंगे फूल तोर कै मारूँ तेरे गाल
तू मन की हौंस बुझाय जैयो बरसाने छैला ....।
बरस दिना है माखन खायो चोरी कर घनश्याम
देखूँगी वा दिन तोकूँ सूधी नाय ब्रज की बाम
तू अपनो जोर जमाय जैयो बरसाने छैला ....।

डारूँगी मैं रंग वैजंती हरौ गुलाबी लाल
भर पिचकारी मारूँ तक-तक और उड़ाऊँ गुलाल
तू फगुवा लैकै आय जैयो बरसाने छैला ....।
लठामार जो खेलै प्यारे संग में लैयो ढाल
तक-तक लठिया मारूँ उछर बचैयो तू नन्दलाल
सिर पगिया बाँधे आय जैयो बरसाने छैला ....॥

मैं कैसे होरी खेलूँ री, मन मोहन मुरली वारे ते ॥
ऊँची अटा पै रहन हमारी
नई-नई मैं घूँघट वारी
सबै करैं मेरी रखवारी
फाग मच्यो ढप बाजन लागे सुन लीनी पिछवारे ते ।
होरी खेल रहे गिरिधारी
गीतन की धुनि लागै प्यारी
सबरी रात नाचैं मतवारी
सुन-सुन मेरी पिंडुरी काँपै फुंदना लट्क्यौ नारे ते ।
जोबन की मदमाती सखियाँ
रंग रंग की पहरैं फरियाँ
सैन चलावैं रस की घतियाँ
होरी कौ रस लेवैं देवैं जुलमी औगुनहारे ते ।
गली-गली में फाग मच्यौ है
रात दिना कौ खेल जम्यौ है
नीको छैला श्याम नच्यौ है
झमक जाय के नाचन लागीं नन्दलाल हुरियारे ते ॥

अँगिया मैं का पै रंगवाऊँ री, रंगरेजा रंग नाय जानै ।।

ऐसी अँगिया मैं रंगवाऊँ
वाय पहर होरी खिलवाऊँ
देखत ही रसिकन बिकवाऊँ
फागुन खूब मनाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वा अँगिया में बाग लगाऊँ
बेला फूल चमेली लाऊँ
गूँथ-गूँथ के हार बनाऊँ
छैला को पहराऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वाई में रंगवाऊँ पपैया
पीउ पीउ की रटन लगैया
वा में पवन चलै पुरवैया
मोरन कूँ नचवाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वा अँगिया में महल रंगाऊँ
वा में पचरंग पलँग बिछाऊँ
गिलम गलीचा तकिया लाऊँ
वा में प्रियतम पाऊँरी रंगरेजा रंग नाय जानै।

होरी आई री बिरज में होरी आई री ।।

गैल गिरारे होरी है रही घर घर छाई री ।।
अपनी अपनी जोट लाग ते सब कोई खेलैं फाग
बड़ौ अनोखौ नन्द महर को जोट न देखै लाग।
कोई खेलै छिरका छिरकी पिचकारी लै मार,
मोहन ऐसी होरी खेलै गागर सिर पै ढार।
रंग-रंग के लियो गुलालन मूठ मूठ रहे मार,
नन्द को ऐसो भायौ खिलारी भर-भर पोटैं मार।

कोई उझकै सैन चलावै घूँघट देय उघार,
नन्द को ऐसो है मदमातौ चोली देवै फार।
कोई छांडै हरो गुलाबी रंग बैजंती लाल,
श्याम रंग में भीतर बाहर रंग दीनी गोपाल।
सबै रंग मिट जावैं होरी के धोये एक बार
श्याम रंग दिन दूनो निखरै धोऔ बार हजार॥

चढ़ के नन्द गाँव पै आई, गोपी बरसाने वारी॥
नंद भवन घेर्यो है जाई
ऊपर चढ़ के छिपे कन्हाई
पकरी जाय यशोदा माई
कहाँ छिपाये कुँवर आपने बोलो महतारी।
हमें दिखाओ अपने लाला
किये लाल यशुदा के गाला
रंगन करीं महर बेहाला
दियौ बताय यशोदा ऊपर ढूँधौ गिरिधारी।
ऊपर चढ़ पकरी मन मोहन
सब मिलके लागी हैं गोहन
गुलचा दिये कटीली भौंहन
कैसे आय छिप्यौ होरी में भडुआ बटमारी।
छीन लई मुरली पीताम्बर
दियो ओढ़ाय रंगीली चूनर
लहँगा फरिया मोतिन झालर
काजर बेंदी कमर कौंधनी करी एक नारी।
सब मिलि घूँघट मार नचावैं
यशुदा की छोरी बतरावैं

देख-देख सब हँसैं हँसावैं
यशुदा की गोदी बैठारी लाली है प्यारी।
मैया भेद समझ ना पाई
बहू श्याम की यह मन भाई
या आसा दुलरावै माई
चूमत समझ हँसी सब गोपीं हँसैं देय तारी॥

राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं।
नंदलाल ब्रजबाल होरी खेलैं॥
बरसाने में पकरि कृष्ण को छीन पीताम्बर छीनी मुरली।
भर पिचकारी गालन मारी नैनन मारी छतियन मारी
ससररररररर , राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं॥
अँखियन में कजरा जू लगायो, रंगबिरंगो भडुवा कर दियो
फगुवा लै के गुलचा मारै बोली ऐयो फिर खेलन कूँ
अरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं॥
छूट के आये ह्यां मनमोहन खीजीं सब ग्वालन की टोलन
भर-भर पोट लदे अपने सिर रहे उड़ाय अबीर की झोरन,
झररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं॥
लाल भई सब गोपी जमुना लाल भई सब बादर लाल,
लाल चूनरी लालइ सारी लाल भई मोतियन की माल
लरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं॥

मेरे मन की समझै कौन जूझ रहे रेलापेली में ॥

लोग यहाँ लाखन जुरे होरी के खिलवार,

रस को मरम न जानही जानैं कहा गमार,

चिपट जाय गुड़ की भेली में। मेरे मन की ... ।

रूप देख सब कोऊ खिचैं जो घूँघट बिच होय,

सांची प्रीति पतंग की तन मन डारै खोय,

लिपट जाय अगिन नवेली में। मेरे मन की ... ।

यह जोबन दिन चार कौ थोरे याके खेल,

रसिया को रस जो पिये अमर होय यह बेल,

रसिक क्यो बिक गयो धेली में। मेरे मन की ... ।

गुड़ की भरी परात ते मिश्री की एक डरी,

मोधू की सब रात बुरी छैला की एक घरी,

धर्‌यो का ठेला ठेली में। मेरे मन की ... ।

बाँको रसिया नान कौ बाँकौ वा कौ प्रेम,

जाकौ जग फीको लगै सोई साधै नेम,

चढ़े गिरिधर की हवेली में। मेरे मन की ... ॥

राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी ! आप मेरे ऊपर दया करिये । इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है अतः आप अपने सहज करुण स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये ।

राधे किशोरी दया करो ।
हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‍यो ॥

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आई हैं । मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ । इस जगत में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है । हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे ! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये । मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ । आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए । हे श्यामा जू ! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है ।